This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **6527**

Unique Paper Code : **2052101203**

Name of the Paper : **Hindi Nibandh Evam Anya Gadya Vidhaein**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi-DSC**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **दो** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10+10=20

(क) यहाँ तक हमने सामान्य रीति पर जातीय उन्नति और अवनीति के नियम कहे। पर खूबी नियमों की किसी एक मुख्य जाति पर लगाने से और उनका पूरा-पूरा असर पर दिखलाने में है। हम समझते हैं कि सबसे उत्तम उदाहरण हमको अपनी ही जाति पर लगाने के अतिरिक्त और कहाँ मिलेगा। बहुत आदिकाल से प्रारंभ कर हम जब से इस जाति को लक्ष्य करते हैं तो उस विभेदक गुण का बीज पाते हैं और उसका नाम मननशीलता ही रखेंगे।

अथवा

मनुष्य की प्रकृति में शील और सात्विकता का आदि संस्थापक यही मनोविकार है। मनुष्य की सज्जनता या दुर्जनता अन्य प्राणियों के साथ उसके संबंध या संसर्ग द्वारा ही व्यक्त होती है।

P.T.O.

यदि कोई मनुष्य जन्म से ही किसी निर्जन स्थान में अपना निर्वाह करे तो उसका कोई कर्म सज्जनता या दुर्जनता की कोटि में न आएगा। उसके सब कर्म निर्लिप्त होंगे। संसार में प्रत्येक प्राणी के जीवन का उद्देश्य दुःख की निवृत्ति और सुख की प्राप्ति है।

(ख) गाँधीजी के असहयोग आंदोलन और चरखा-अभियान से अनेक उदारवादी विचारक चिन्तित हो गये थे। वे भारत और ब्रिटेन का संबंध तोड़ने के पक्ष में न थे। वे ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर भारत को 'डोमीनियन' या अर्द्ध-उपनिवेश बनाने का स्वप्न देख रहे थे। रवीन्द्रनाथ राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के नये उभार का समर्थन न करके पूर्व और पश्चिम को सांस्कृतिक धरातल पर मिलाने का प्रचार कर रहे थे।

अथवा

दिल्ली, लखनऊ, इलाहाबाद से पटना तक के कितने ही रेडियो कवि सम्मेलनों में हम साथ-साथ काव्य पाठ करते रहे थे। मैं उन्हें खूब डूबकर सुनता था, चाहता था : बंद खिड़कियाँ, दरवाजे पर पड़े मोटे रंगीन पर्दे—सब इस ऐसी ताजा हवा के झोंकों से हिलने-झूलने लगे। मेरी कच्ची ललक की मायूसी न हुई। हाँ, यह एहसास बेशक हुआ कि विवेक स्थिरता लाता है। रस की छलकन मशहूर है। अज्ञेय का विरस, शांत लेखन अपनी अलग अहमियत रखता है।

2. 'जातियों का अनूठापन' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। 15

अथवा

निबंध के तत्त्वों के आधार पर 'आचरण की सभ्यता' की समीक्षा कीजिए।

3. 'करुणा' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। 15

अथवा

'भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

4. 'नये संघर्ष' में चित्रित निराला के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

'सदाचार का ताबीज' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

5. शास्त्रीजी ने अज्ञेय को एक नये ही रूप में पाठकों के समक्ष रखा है। स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' का प्रतिपाद्य लिखिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 5,5

(क) राम विलास शर्मा का साहित्यिक परिचय

(ख) 'आचरण की सभ्यता' की भाषा-शैली।

2. कबीर अथवा भूषण का साहित्यिक परिचय दीजिए। (10)

3. पाठ्यक्रम में संकलित कबीर के दोहों का सार लिखिए। (10)

अथवा

नागार्जुन की 'बादल को घिरते देखा है' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. बिहारी के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

रघुवीर सहाय की कविता 'कला क्या है' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (5×3=15)

(क) किसी एक आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास

(ख) सूफी काव्य

(ग) ब्रजभाषा

(घ) राजभाषा

(ङ) छायावाद

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 114 **J**

Unique Paper Code : 62051202

Name of the Paper : Hindi – A

Name of the Course : B.A. (Prog.) Hindi CBCS

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नीचे दिए गए पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (10+10+10=30)

(क) पद गाएँ मन हरषियाँ, साषी कह्या अनंद।

सो तन नाँव न जाँणिया, गल मैं पड़िया फंध।।

जप तप दीसैं थोथरा, तीरथ व्रत बेसास।

सूवै सैं बल सेविया, यौं जग चल्या निरास।

अथवा

प्रेतिनी पिसाचरू निसाचर निसाचरिहू मिलि मिलि आपुस में गावत बधाई है।

भैरौ-भूत प्रेत भूरि भूधर भयंकर से, जुत्थ जुत्थ जोगिनी जमाति जोरि आई है।

किलकि किलकि कै कुतूहल करति काली डिम डिम डमरू दिगंबर बजाई है।

सिवा पूछैं सिव सों समाज आजु कहाँ चली काहू पै सिवानरेस भृकुटी चढ़ाई है।।

(ख) नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सौं बिंध्यो आगे कौन हवाल।।
कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननु हीं सब बात।।

अथवा

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है-बढ़े चलो-बढ़ चलो !

(ग) नरम निदाघ बाल कस्तूरी
मृग छालों पर पलथी मारे
मदिरारुण आँखों वाले उन
उन्मद किन्नर-किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अँगुलियों को
वंशी पर फिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

अथवा

अद्वितीय हर एक है मनुष्य
औ उसका अधिकर अद्वितीय होने का
छीनकर जो खुद को अद्वितीय कहते हैं।
उनकी रचनाएँ हों या उनके हों विचार
पीड़ा के एक रसभीने अवलेह में लपेटकर
परसे जाते हैं तो उसको कला कहते हैं।

[This question paper contains 3 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **4160** **I**

Unique Paper Code : 2051001002

Name of the Paper : Hindi Aupcharik Lekhan (B) (AEC)

Name of the Course : **Common Programme Group**

Semester : II

Time : 2 Hours ***Maximum Marks : 60***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कार्यालयी हिंदी के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

व्यावसायिक हिंदी की विशेषताएँ लिखिए।

P.T.O.

2. प्रतिवेदन का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

प्रारूपण का सामान्य परिचय दीजिए।

3. सूचना के अधिकार के लिए आवेदन करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए। 12

अथवा

कार्यालयी पत्र के विभिन्न अंगों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

4. किसी सरकारी बैंक में हिंदी अधिकारी पद पर आवेदन के लिए स्ववृत्त तैयार कीजिए। 12

अथवा

महाविद्यालय के वार्षिक उत्सव के आयोजन के सन्दर्भ में एक प्रेस विज्ञप्ति तैयार कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी कीजिए : 6+6=12

(क) कार्यालयी पत्र का महत्त्व

(ख) व्यावसायिक पत्र

(ग) टिप्पण का महत्त्व

(घ) विज्ञप्ति की विशेषताएँ

***

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4161 **J**

Unique Paper Code : 2051001001

Name of the Paper : Hindi Bhasha : Sampreshan aur Sanchar (Hindi-A)

Name of the Course : **Common Prog. Group – AEC**

Semester : II

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. संप्रेषण और संचार के पारस्परिक संबंध को उद्घाटित कीजिए। (12)

अथवा

संप्रेषण की प्रक्रिया पर रेखांकित डालिए।

2. संप्रेषण की अवधारणा स्पष्ट करते हुए इसके महत्त्व पर पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

संप्रेषण के विभिन्न बाधक तत्त्वों पर प्रकाश डालते हुए इनके निवारण पर प्रकाश डालिए।

3. 'स्वच्छता और स्वास्थ्य' विषय पर एक सर्वेक्षण आधारित रिपोर्ट तैयार कीजिए। (12)

अथवा

ब्लॉग-लेखन की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

4. संवाद-लेखन की मुख्य विशेषताएँ पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

एक अच्छे संपादकीय के मुख्य लक्षणों पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (6+6=12)

(क) मानसिक स्वास्थ्य संबंधी ब्लॉग लेखन

(ख) लिखित-संप्रेषण

(ग) डायरी-लेखन

(घ) 'बेटी-बचाव बेटी-पढ़ाव' अनुच्छेद लेखन

(14,000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 661 **J**

Unique Paper Code : 72052805

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sampreshan (AECC)

Name of the Course : **B.Com. (Prog.) All Courses**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. संप्रेषण का अर्थ एवं स्वरूप बताते हुए उसकी अवधारणा का विस्तृत वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

संप्रेषण की प्रक्रिया में प्रतिपुष्टि के महत्व पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

2. संप्रेषण में होने वाली बाधाओं की चर्चा करते हुए उनके समाधान को विस्तारपूर्वक लिखिए। (15)

P.T.O.

अथवा

भाषायी दक्षता को प्राप्त करने के लिए भाषिक सरंचना किस प्रकार उपयोगी है। विवेजना कीजिए।

3. व्यावसायिक संप्रेषण के महत्व को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

व्यावसायिक भाषा एवं संप्रेषण में तकनीक की उपयोगिता को विस्तार से समझाइए।

4. रिपोर्ट-लेखन के मुख्य तत्वों का उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

किसी महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के पद हेतु स्ववृत तैयार कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणियां लिखिए : (8,7)

   (i) अभाषिक संप्रेषण

   (ii) अरस्तू का संप्रेषण मॉडल

   (iii) ज्ञापन

   (iv) सोशल नेटवर्किंग

   (v) भाषिक संस्कृति

(100)

5. 'हिमाद्रि तुंग शृंग से' कविता की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'बादल को घिरते देखा है' कविता के भाव-सौंदर्य की समीक्षा कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए। 6×3=18

(क) संपर्क भाषा के रूप में हिंदी

(ख) सगुण भक्ति काव्यधारा की विशेषताएँ

(ग) बिहारी का साहित्यिक परिचय

(घ) भारतेन्दु की काव्यगत विशेषताएँ

(ङ) जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय

(च) छायावाद

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No.	: ....
Sl. No. of Q. Paper	: **5363** **I**
Unique Paper Code	: 2055201001
Name of the Paper	: **हिंदी भाषा और साहित्य (क): GE**
Name of the Course	: **B.A.(Prog.) Hindi**
Semester	: II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

Instructions for Candidates :

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या लिखिए। 8×3=24

(क) दरसन दीजै राम दरसन दीजै। दरसन दीजै विलंब न कीजै।

दरसन तोरा जीवन मोरा। बिन दरसन क्यों जीवै चकोरा।

साधो सतगुरू सब जग चेला। अबके बिछुरे मिलन दुहेला।

तन धन जोबन झूठी आसा। संत संत भाषे जन रैदास

अथवा

साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धारि सरजा सिवाजी
जंग जीतन चलत है।
भूषण भनत नाद-विहद नगारन के नदीनद मद गैबरन
के रलत है।
ऐलफैल खैलभैल खलक में गैलगैल गजन की ठैलपैल
सैल उलसत है।
तारा सो तरनि धुरिधारा में लगत जिमि थारा पर पारा
पारावार यो हलत है।

(ख) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत है नैननु ही सब बात।।

अथवा

कैसा पागलपन है, मैं बेटी को भी कहता हूँ बेटा,
कड़ुवे-मीठे स्वाद विश्व के स्वागत कर, सहता हूँ बेटा,
तुझे बिदाकर एकाकी अपमानित-सा रहता हूँ बेटा,
दो आँसू आ गये, समझता हूँ उनमें बहता हूँ बेटा,

(ग) हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती –
स्वयंप्रभा समुज्जवला
स्वतंत्रता पुकारती–
अमर्त्य वीरपुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पन्थ है – बढ़े चलो, बढ़े चलो।

अथवा

पानपात्र द्राक्षासव पूरित
रखे सामने अपने-अपने
लोहित चंदन की त्रिपटी पर,
नरम निदाग बाल कस्तूरी
मृगछालों पर पलथी मारे
मदिरारूण आँखों वाले उन
उन्मद किन्न-किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अंगुलियों को
वंशी पर फिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

2. ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर बताइए।

3. आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए। 12

अथवा

सन्त-काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

4. रैदास की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'भूषण वीर रस के कवि हैं'। मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

"नर हो, न निराश करो मन को" कविता का सौन्दर्य पक्ष स्पष्ट कीजिए।

5. बालिका का परिचय कविता में भाषा की सरलता और भावनात्मक गहराई कैसे समायोजित की गई है ? उदाहरण देकर लिखिए। 12

अथवा

निराला की कविता 'तोड़ती पत्थर' का प्रतिपाद्य लिखिए।

6. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी कीजिए : 6×3=18

(i) पश्चिमी हिंदी

(ii) सगुण काव्य

(iii) रीतिकाल

(iv) बिहारी हिंदी

(v) मैथिलीशरण गुप्त

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **5364 I**

Unique Paper Code : 2055201002

Name of the Paper : हिन्दी भाषा और साहित्य (ख) GE

Name of the Course : **B.A. Prog. Hindi**

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

Instructions for Candidates :

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिये। 8×3=24

(i) गुरू गोविंद तौ एक है, दूजा यह आकार।
आपा मेट जीवत मरै, तो पावै करतार।

अथवा

कृपा सिधु बोले मुसुकाई। सोइ करू जोहि तव नाव न जाई।।

बेगि आनु जल पाप पखारू। होत बिलंब उतारहि पारू।।

जासु नाम सुमरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा।।

सोई कृपालु केवटहिं निहोरा। जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा।।

(ii) निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे
मरणोतर गुंजित गान रहे
सब जाए अभी पर मान रहे
कुछ हो न तजो निज साधन को
नर हो, न निराश करो मन को

अथवा

शिव के नन्दी - सा नदिया में पानी पीता
निर्मल नभ अवनी के ऊपर बिसुध खड़ा है
काल काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा
खोई आँखों देख रहा है दिवास्वप्न को।

(iii) मेरा मंदिर; मेरी मसजिद, काबा काशी यह मेरी
पूजा पाठ, ध्यान, जप, तप, है घट-घट वासी यह मेरी
कृष्णचन्द्र की क्रीड़ाओं को अपने आंगन में देखो
कौशल्या के मातृ-मोद को, अपने ही मन में देखो

अथवा

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु-मालिका अट्टालिक, प्राकार।

2. हिंदी भाषा के उद्भव पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए। 12

अथवा

आदिकाल की प्रमुख विशेषता को उल्लेखित कीजिए।

3. निर्गुण भक्ति कविता में 'गुरू के महत्व' को प्रतिपादित कीजिए। 12

अथवा

रामचरितमानस के 'केवट प्रसंग' का भावार्थ लिखिए।

4. 'धूप' कविता में केदारनाथ अग्रवाल ने धूप को किस रूप में चित्रित किया है ? यह प्रकृति का साधारण वर्णन है या किसी गहरे मानवीय भाव का प्रतीक ? विश्लेषण कीजिए। 12

अथवा

घनानन्द की कविता में अटूट प्रेम की अभिव्यक्ति है? विश्लेषण कीजिए।

5. सुमित्रा नंदन पंत की कविता "आह: धरती कितना देती है" की मूल संवेदना लिखिए। (12)

अथवा

"लीक पर वे चलें" कविता के माध्यम से जीवन के निहितार्थ को स्पष्ट कीजिए।

6. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (3×6=18)

(क) हिंदी भाषा की प्रमुख बोलियाँ

(ख) भक्तिकालीन साहित्य

(ग) द्विवेदी युगीनं कविता

(घ) रीति-बदध काव्य धारा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5365 **J**

Unique Paper Code : 2055201003

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya (C)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi (C) – GE**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (3×8=24)

(क) भली भई जु गुर मिल्या, नहीं तर होती हाँणी।
दीपक दिष्टि पतंग ज्यूं, पड़ता पूरी जांणी ।।
माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवै पड़ंत।
कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उबरंत ।।

अथवा

P.T.O.

मुख दधि पोंछि, बुद्धि इक कींही, दोना पीठी दुरायौ।
डारि साँटि, मुसुकाइ जसोदा, स्यामहि कंठ लगायौ ।।
बाल – विनोद –मेद मन मोह्यौं, भक्ति प्रताप दिखायों ।।
सूरदास जसुमति कौ यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायो ।।

(ख) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरै भौन में करत हैं, नैननु ही सो बात ।।
कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वा खाए बौराय जग, वा पाए बौराय ।।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखईन वानि अनोखी, अघानी कहूँ नहिं आनि तिहारियै।
एक ही जीव हुतौ सुतौ वार्यौ सुजान, सकोच और सोच सहारियै।
रोकी रहै न दहै, घनानन्द बावरी रीझ के हाथनि हारियै ।।

(ग) देखा आँगन के कोने मे कई नवागत
छोटी छोटी छाता ताने खड़े हुए है।
छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्ही, प्यारी
जो भी हो, वे हरे हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे
डिंब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चे से।

अथवा

लीक पर वे चले जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।
साक्षी हों राह रोके खड़ें
पीले बाँस के झुरमुट,
कि उनमें गा रहा है जो हवा
उसी से लिपटे हुए सपने हमारे हैं।

2. हिंदी भाषा के उद्‌भव, विकास और परंपरा को लिखिए। (12)

अथवा

आधुनिक काल की हिंदी कविता की सामान्य विशेषताएँ लिखिए।

3. कबीर महान समाज सुधारक थे? उदाहरण सहित लिखिए। (12)

अथवा

सूरदास वात्सल्य रस की प्रतिमूर्ति हैं? स्पष्ट कीजिए।

4. बिहारी की कविता "गागर में सागर" भरने वाली है? अपने विचार लिखिए। (12)

5. 'हिमाद्रि तुंग शृंग से' कविता की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'बादल को घिरते देखा है' कविता के भाव-सौंदर्य की समीक्षा कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए। 6×3=18

(क) संपर्क भाषा के रूप में हिंदी

(ख) सगुण भक्ति काव्यधारा की विशेषताएँ

(ग) बिहारी का साहित्यिक परिचय

(घ) भारतेन्दु की काव्यगत विशेषताएँ

(ङ) जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय

(च) छायावाद

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No.	: ....
Sl. No. of Q. Paper	: **5363 I**
Unique Paper Code	: 2055201001
Name of the Paper	: **हिंदी भाषा और साहित्य (क): GE**
Name of the Course	: **B.A.(Prog.) Hindi**
Semester	: II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

Instructions for Candidates :

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या लिखिए। 8×3=24

(क) दरसन दीजै राम दरसन दीजै। दरसन दीजै विलंब न कीजै।

दरसन तोरा जीवन मोरा। बिन दरसन क्यों जीवै चकोरा।

साधो सतगुरू सब जग चेला। अबके बिछुरे मिलन दुहेला।

तन धन जोबन झूठी आसा। संत संत भाषे जन रैदास

अथवा

साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धारि सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।

भूषण भनत नाद-विहद नगारन के नदीनद मद गैबरन के रलत है।

ऐलफैल खैलभैल खलक में गैलगैल गजन की ठैलपैल सैल उलसत है।

तारा सो तरनि धुरिधारा में लगत जिमि थारा पर पारा पारावार यो हलत है।

(ख) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु ही सब बात।।

अथवा

कैसा पागलपन है, मैं बेटी को भी कहता हूँ बेटा,
कडुवे-मीठे स्वाद विश्व के स्वागत कर, सहता हूँ बेटा,
तुझे बिदाकर एकाकी अपमानित-सा रहता हूँ बेटा,
दो आँसू आ गये, समझता हूँ उनमें बहता हूँ बेटा,

(ग) हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती –
स्वयंप्रभा समुज्जवला
स्वतंत्रता पुकारती–
अमर्त्य वीरपुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पन्थ है – बढ़े चलो, बढ़े चलो।

अथवा

पानपात्र द्राक्षासव पूरित
रखे सामने अपने-अपने
लोहित चंदन की त्रिपटी पर,
नरम निदाग बाल कस्तूरी
मृगछालों पर पलथी मारे
मंदिरारूण आँखों वाले उन
उन्मद किन्न-किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अंगुलियों को
वंशी पर फिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

2. ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर बताइए।

3. आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए। 12

अथवा

सन्त-काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

4. रैदास की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'भूषण वीर रस के कवि हैं'। मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

घनानन्द की कविता में अटूट प्रेम की अभिव्यक्ति है? विश्लेषण कीजिए।

5. सुमित्रा नंदन पंत की कविता "आह: धरती कितना देती है" की मूल संवेदना लिखिए। (12)

अथवा

"लीक पर वे चलें" कविता के माध्यम से जीवन के निहितार्थ को स्पष्ट कीजिए।

6. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (3×6=18)

(क) हिंदी भाषा की प्रमुख बोलियाँ

(ख) भक्तिकालीन साहित्य

(ग) द्विवेदी युगीनं कविता

(घ) रीति-बदध काव्य धारा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5365 **J**

Unique Paper Code : 2055201003

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya (C)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi (C) – GE**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (3×8=24)

(क) भली भई जु गुर मिल्या, नहीं तर होती हाँणी।
दीपक दिष्टि पतंग ज्यूं, पड़ता पूरी जांणी ।।
माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवै पड़ंत।
कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उबरंत ।।

अथवा

मुख दधि पोंछि, बुद्धि इक कींही, दोना पीठी दुरायौ।
डारि साँटि, मुसुकाइ जसोदा, स्यामहि कंठ लगायौ ।।
बाल - विनोद -मेद मन मोह्यौं, भक्ति प्रताप दिखायों ।।
सूरदास जसुमति कौ यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायो ।।

(ख) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरै भौन में करत हैं, नैननु ही सो बात ।।
कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वा खाए बौराय जग, वा पाए बौराय ।।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखईन वानि अनोखी, अघानी कहूँ नहिं आनि तिहारियै।
एक ही जीव हुतौ सुतौ वार्यौ सुजान, सकोच और सोच सहारियै।
रोकी रहै न दहै, घनानन्द बावरी रीझ के हाथनि हारियै ।।

(ग) देखा आँगन के कोने मे कई नवागत
छोटी छोटी छाता ताने खड़े हुए है।
छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्ही, प्यारी
जो भी हो, वे हरे हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे
डिंब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चे से।

अथवा

लीक पर वे चले जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।
साक्षी हों राह रोके खड़ें
पीले बाँस के झुरमुट,
कि उनमें गा रहा है जो हवा
उसी से लिपटे हुए सपने हमारे हैं।

2. हिंदी भाषा के उद्‌भव, विकास और परंपरा को लिखिए। (12)

अथवा

आधुनिक काल की हिंदी कविता की सामान्य विशेषताएँ लिखिए।

3. कबीर महान समाज सुधारक थे? उदाहरण सहित लिखिए। (12)

अथवा

सूरदास वात्सल्य रस की प्रतिमूर्ति हैं? स्पष्ट कीजिए।

4. बिहारी की कविता "गागर में सागर" भरने वाली है? अपने विचार लिखिए। (12)

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती।

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती,

अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,

प्रशस्त पुण्य पंथ है - बढ़े चलो - बढ़े चलो।

असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी

सपूत मातृभूमि के रूको न शूर साहसी।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5360 **J**

Unique Paper Code : 2055091001

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sahitya Ka Udbhav aur Vikas (A)

Name of the Course : **B.Com. Prog. – GE: Hindi A**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (10,10)

(क) राजस्थानी हिंदी की बोलियाँ और क्षेत्र

(ख) पश्चिमी हिंदी

(ग) हिंदी भाषा का सामान्य परिचय

(घ) अवधी का सामान्य परिचय

2. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (10,10)

(क) आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(ख) संत काव्यधारा

(ग) छायावाद

(घ) नई कविता

3. मीरा का साहित्यिक परिचय दीजिए। (15)

अथवा

कबीर की विद्रोही चेतना पर प्रकाश डालिए।

4. जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

'भारत भारती' के पठित अंश का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10,10)

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहूणा, बहुरि न आंवौ हट्ट।

अथवा

म्हारो गोकुल रो ब्रजवासी।
ब्रजलीला लाख जण सुख पावाँ, ब्रजवणता सुखरासी।
णाच्याँ गावाँ ताल वज्यावाँ, पावाँ आणन्द हांसी।
णन्द जसोदा पुन्न री प्रगटयां, प्रभु अविनासी॥

(क) वे आर्य्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे,
वे स्वार्थ-रत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार के उपकार-हित जब जन्म लेते थे सभी,
निश्चेष्ट होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी?

अथवा

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 5361

Unique Paper Code : 2055091002

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya ka Udbhav aur Vikas (B)

Name of the Course : B.Com. (Prog.)

Type of the Paper : GE : Hindi B

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. (क) हिन्दी भाषा के विकास का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विवेचन कीजिए। 12

अथवा

पहाड़ी हिन्दी की बोलियों का परिचय दीजिए।

(ख) रीतिकाल की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 12

अथवा

छायावाद की सामान्य प्रवृत्तियाँ लिखिए।

P.T.O.

2. "तुलसी के काव्य में भावों की मार्मिक और गंभीर व्यंजना हुई है।" 'केवट प्रसंग' के आधार पर इस कथन की विवेचना कीजिए। 12

अथवा

कबीर के काव्य की प्रधान विशेषताएँ बताइए।

3. बिहारी के काव्य-सौष्ठव और भाषा पर विचार कीजिए। 12

अथवा

"भूषण काव्य-रीति में वीरता को ढालने वाले कवि हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' गीत के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है ? स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

'अग्निपथ' कविता का मूलभाव समझाइए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराइ।
धरती सब कागद करौं, तऊ हरि गुण लिख्या न जाइ॥

अथवा

मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई॥
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई॥
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई॥

(ख) या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यौं ज्यौं बूड़ै स्याम रंग, त्यौं त्यौं उज्जलु होइ॥

अथवा

ऐल–फैल खैल–भैल, खलक में गैल–गैल,
गजन की ठैल–पैल, सैल उसलत है।
तारा सो तरनि, धूरिधारा में लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है॥

(ग) अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा
सरस तामरस गर्भ विभा पर-नाच रही तरुशिखा मनोहर
छिटका जीवन हरियाली पर-मंगल कुंकुम सारा॥

अथवा

तू न थकेगा कभी,
तू न रुकेगा कभी,
तू न मुड़ेगा कभी,
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ,
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5362**

Unique Paper Code : **2055091003**

Name of the Paper : **Hindi Bhasha Aur Sahitya ka Udbhav aur Vikas (C)**

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Type of the Paper : **GE : Hindi C**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×12=24

   (*i*) हिन्दी भाषा का विकास संक्षेप में लिखिए।

   (*ii*) हिन्दी भाषा के भौगोलिक विस्तार में आने वाली बोलियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

   (*iii*) आदिकाल के नामकरण पर विचार कीजिए।

   (*iv*) छायावाद की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. कबीर की दार्शनिकता को समझाइए। 12

अथवा

सूरदास के पदों का प्रतिपाद्य बताइए।

3. बिहारी का साहित्यिक परिचय लिखिए। 12

अथवा

घनानंद के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

4. 'पुष्प की अभिलाषा' में पुष्प की अंतिम इच्छा क्या है ? कवि की दृष्टि से समझाइए। 12

अथवा

'रोटी और संसद' कविता में कवि की पीड़ा क्या है ? स्पष्ट कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय,
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।
माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फ़ेर,
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।

अथवा

उधो, मन न भए दस बीस।
एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को अवराधै ईस॥

सिथिल भईं सबहीं माधौ बिनु जथा देह बिनु सीस।

स्वासा अटकि रही आसा लगि, जीवहिं कोटि बरीस॥

तुम तौ सखा स्यामसुंदर के, सकल जोग के ईस।

सूरदास, रसिकन की बतियां पुरवौ मन जगदीस॥

(ख) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।

जा तन की झांई परे स्याम हरित दुति होय॥

थोड़े ही गुन रीझते बिसराई वह बानि।

तुमहूँ कान्ह मनौ भए आज-काल्हि के दानि॥

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो-नयो लागै ज्यों-ज्यों निहारियै।

त्यों इन आंखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै॥

एक ही जीव हुतौ सु तौ वार्यौ, सुजान, संकोच और सोच सहारियै।

रोकौ रहै न, दहै घनआनंद बावरी रीझि के हाथन हारियै॥

(ग) चाह नहीं, मैं सुरबाला के

गहनों में गूंथा जाऊँ,

चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध

प्यारी को ललचाऊँ,

चाह नहीं सम्राटों के शव पर

हे हरि डाला जाऊँ,

अथवा

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ...

'यह तीसरा आदमी कौन है?

मेरे देश की संसद मौन है।

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती।

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती,

अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,

प्रशस्त पुण्य पंथ है - बढ़े चलो - बढ़े चलो।

असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी

सपूत मातृभूमि के रूको न शूर साहसी।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5360 **J**

Unique Paper Code : 2055091001

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sahitya Ka Udbhav aur Vikas (A)

Name of the Course : **B.Com. Prog. – GE: Hindi A**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (10,10)

(क) राजस्थानी हिंदी की बोलियाँ और क्षेत्र

(ख) पश्चिमी हिंदी

P.T.O.

(ग) हिंदी भाषा का सामान्य परिचय

(घ) अवधी का सामान्य परिचय

2. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (10,10)

(क) आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(ख) संत काव्यधारा

(ग) छायावाद

(घ) नई कविता

3. मीरा का साहित्यिक परिचय दीजिए। (15)

अथवा

कबीर की विद्रोही चेतना पर प्रकाश डालिए।

4. जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

'भारत भारती' के पठित अंश का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10,10)

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहूणा, बहुरि न आंवौ हट्ट।

अथवा

म्हारो गोकुल रो ब्रजवासी।
ब्रजलीला लाख जण सुख पावाँ, ब्रजवणता सुखरासी।
णाच्याँ गावाँ ताल वज्यावाँ, पावाँ आणन्द हांसी।
णन्द जसोदा पुन्न री प्रगटयां, प्रभु अविनासी।।

(क) वे आर्य्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे,
वे स्वार्थ-रत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार के उपकार-हित जब जन्म लेते थे सभी,
निश्चेष्ट होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी?

अथवा

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5362**

Unique Paper Code : **2055091003**

Name of the Paper : **Hindi Bhasha Aur Sahitya ka Udbhav aur Vikas (C)**

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Type of the Paper : **GE : Hindi C**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×12=24

   (*i*) हिन्दी भाषा का विकास संक्षेप में लिखिए।

   (*ii*) हिन्दी भाषा के भौगोलिक विस्तार में आने वाली बोलियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

   (*iii*) आदिकाल के नामकरण पर विचार कीजिए।

   (*iv*) छायावाद की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

2. कबीर की दार्शनिकता को समझाइए। 12

अथवा

सूरदास के पदों का प्रतिपाद्य बताइए।

3. बिहारी का साहित्यिक परिचय लिखिए। 12

अथवा

घनानंद के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

4. 'पुष्प की अभिलाषा' में पुष्प की अंतिम इच्छा क्या है ? कवि की दृष्टि से समझाइए। 12

अथवा

'रोटी और संसद' कविता में कवि की पीड़ा क्या है ? स्पष्ट कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय,

बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फ़ेर,

कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।

अथवा

उधो, मन न भए दस बीस।

एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को अवराधै ईस॥

सिथिल भईं सबहीं माधौ बिनु जथा देह बिनु सीस।

स्वासा अटकि रही आसा लगि, जीवहिं कोटि बरीस॥

तुम तौ सखा स्यामसुंदर के, सकल जोग के ईस।

सूरदास, रसिकन की बतियां पुरवौ मन जगदीस॥

(ख) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।

जा तन की झांई परे स्याम हरित दुति होय॥

थोड़े ही गुन रीझते बिसराई वह बानि।

तुमहूँ कान्ह मनौ भए आज–काल्हि के दानि॥

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो–नयो लागै ज्यों–ज्यों निहारियै।

त्यों इन आंखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै॥

एक ही जीव हुतौ सु तौ वार्यौ, सुजान, संकोच और सोच सहारियै।

रोकौ रहै न, दहै घनआनंद बावरी रीझि के हाथन हारियै॥

(ग) चाह नहीं, मैं सुरबाला के

गहनों में गूंथा जाऊँ,

चाह नहीं प्रेमी–माला में बिंध

प्यारी को ललचाऊँ,

चाह नहीं सम्राटों के शव पर

हे हरि डाला जाऊँ,

अथवा

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ...

'यह तीसरा आदमी कौन है?

मेरे देश की संसद मौन है।

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 5361

Unique Paper Code : 2055091002

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya ka Udbhav aur Vikas (B)

Name of the Course : B.Com. (Prog.)

Type of the Paper : GE : Hindi B

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. (क) हिन्दी भाषा के विकास का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विवेचन कीजिए। 12

अथवा

पहाड़ी हिन्दी की बोलियों का परिचय दीजिए।

(ख) रीतिकाल की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 12

अथवा

छायावाद की सामान्य प्रवृत्तियाँ लिखिए।

2. "तुलसी के काव्य में भावों की मार्मिक और गंभीर व्यंजना हुई है।" 'केवट प्रसंग' के आधार पर इस कथन की विवेचना कीजिए। 12

अथवा

कबीर के काव्य की प्रधान विशेषताएँ बताइए।

3. बिहारी के काव्य-सौष्ठव और भाषा पर विचार कीजिए। 12

अथवा

"भूषण काव्य-रीति में वीरता को ढालने वाले कवि हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' गीत के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है ? स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

'अग्निपथ' कविता का मूलभाव समझाइए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराइ।
धरती सब कागद करौं, तऊ हरि गुण लिख्या न जाइ॥

अथवा

मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई॥
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई॥
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई॥

(ख) या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ।

ज्यौं ज्यौं बूड़ै स्याम रंग, त्यौं त्यौं उज्जलु होइ॥

अथवा

ऐल-फैल खैल-भैल, खलक में गैल-गैल,

गजन की ठैल-पैल, सैल उसलत है।

तारा सो तरनि, धूरिधारा में लगत जिमि,

थारा पर पारा पारावार यों हलत है॥

(ग) अरुण यह मधुमय देश हमारा

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा

सरस तामरस गर्भ विभा पर-नाच रही तरुशिखा मनोहर

छिटका जीवन हरियाली पर-मंगल कुंकुम सारा॥

अथवा

तू न थकेगा कभी,

तू न रुकेगा कभी,

तू न मुड़ेगा कभी,

कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ,

अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।

5. 'हिमाद्रि तुंग शृंग से' कविता की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'बादल को घिरते देखा है' कविता के भाव-सौंदर्य की समीक्षा कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए। 6×3=18

(क) संपर्क भाषा के रूप में हिंदी

(ख) सगुण भक्ति काव्यधारा की विशेषताएँ

(ग) बिहारी का साहित्यिक परिचय

(घ) भारतेन्दु की काव्यगत विशेषताएँ

(ङ) जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय

(च) छायावाद

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **5363 I**

Unique Paper Code : 2055201001

Name of the Paper : **हिंदी भाषा और साहित्य (क): GE**

Name of the Course : **B.A.(Prog.) Hindi**

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

Instructions for Candidates :

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या लिखिए। 8×3=24

(क) दरसन दीजै राम दरसन दीजै। दरसन दीजै विलंब न कीजै।

दरसन तोरा जीवन मोरा। बिन दरसन क्यों जीवै चकोरा।

साधो सतगुरू सब जग चेला। अबके बिछुरे मिलन दुहेला।

तन धन जोबन झूठी आसा। संत संत भाषे जन रैदास

अथवा

साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धारि सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषण भनत नाद-विहद नगारन के नदीनद मद गैबरन के रलत है।
ऐलफैल खैलभैल खलक में गैलगैल गजन की ठैलपैल सैल उलसत है।
तारा सो तरनि धुरिधारा में लगत जिमि थारा पर पारा पारावार यो हलत है।

(ख) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु ही सब बात।।

अथवा

कैसा पागलपन है, मैं बेटी को भी कहता हूँ बेटा,
कडुवे-मीठे स्वाद विश्व के स्वागत कर, सहता हूँ बेटा,
तुझे बिदाकर एकाकी अपमानित-सा रहता हूँ बेटा,
दो आँसू आ गये, समझता हूँ उनमें बहता हूँ बेटा,

(ग) हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती –
स्वयंप्रभा समुज्जवला
स्वतंत्रता पुकारती–
अमर्त्य वीरपुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पन्थ है – बढ़े चलो, बढ़े चलो।

अथवा

पानपात्र द्राक्षासव पूरित
रखे सामने अपने-अपने
लोहित चंदन की त्रिपटी पर,
नरम निदाग बाल कस्तूरी
मृगछालों पर पलथी मारे
मदिरारूण आँखों वाले उन
उन्मद किन्न-किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अंगुलियों को
वंशी पर फिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

2. ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर बताइए।

3. आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए। 12

अथवा

सन्त-काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

4. रैदास की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'भूषण वीर रस के कवि हैं'। मूल्यांकन कीजिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 659 **J**

Unique Paper Code : 72052803

Name of the Paper : हिन्दी भाषा और संप्रेषण

Name of the Course : **B.A. Hons. All Courses (AECC)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. संप्रेषण का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

संप्रेषण की प्रक्रिया के विविध चरणों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

2. भ्रामक संप्रेषण और प्रभावी संप्रेषण में अंतर स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

लिखित संप्रेषण के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिए ।

3. भूमंडलीकरण के इस दौर में संप्रेषण के मशीनी माध्यमों के योगदान की विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

एकालाप और संलाप से क्या अभिप्राय है, संप्रेषण में इसकी भूमिका स्पष्ट कीजिए।

4. भारत विविधताओं का देश है इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए। (15)

अथवा

वर्णन और विश्लेषण में क्या अंतर है?

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (7.5×2=15)

(क) संवाद

(ख) व्यावसायिक संप्रेषण

(ग) मौखिक संप्रेषण

(घ) अभाषिक संप्रेषण

(ङ) नाट्यांश पठन

(100)

(2) निबंध अथवा अनुच्छेद लेखन

(3) संप्रेषण के मॉडल अथवा सम्प्रेषण में बाधाएँ

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 663 **J**

Unique Paper Code : 72052807

Name of the Paper : Hindi Bhasha Yogyata Samvardhak (AECC)

Name of the Course : **B.A. Prog. Functional Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सम्प्रेषण की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए इसके प्रमुख तत्वों को बताइए। (10)

अथवा

सम्प्रेणण की प्रमुख चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए इसके समाधान लिखिए।

2. मौखिक सम्प्रेषण के लाभ व दोषों का विवेचन कीजिए । (10)

अथवा

सम्प्रेषण के विभिन्न प्रकारों का परिचय दीजिए।

3. सामूहिक चर्चा के उद्देश्यों को रेखांकित कीजिये। (10)

अथवा

इंटरनेट के प्रयोग पर समीक्षापरक टिप्पणी लिखिए।

4. संप्रेषण में उच्चारण के महत्व को रेखांकित कीजिए। (10)

अथवा

संप्रेणण में विश्लेषण और व्याख्या की भूमिका करें स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए: (6,6,6)

(1) सामाजिक सम्प्रेषण अथवा व्यावसायिक सम्प्रेषण

(2) प्रत्यक्ष कथन अथवा अप्रत्यक्ष कथन

(3) भाषण अथवा वाद-विवाद

6. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए: (6,6,5)

(1) प्रस्तुति अथवा पत्र लेखन

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 660 **J**

Unique Paper Code : 72052804

Name of the Paper : हिंदी भाषा और संप्रेषण (AECC)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) All Courses**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. संप्रेषण की संकल्पना को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

आभाषिक संप्रेषण की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

2. संप्रेषण से आप क्या समझते हैं? संप्रेषण की संभावनाओं पर विचार कीजिए? (10)

अथवा

प्रभावी संप्रेषण किसे कहते हैं? सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

3. एकलाप तथा सामूहिक चर्चा में अंतर स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

'वेबसाइट के माध्यम से संप्रेषण' विषय पर एक लेख लिखिए।

4. प्रभावी व्यक्तित्व निर्माण में संप्रेषण की भूमिका पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

भाषा व्यवहार संप्रेषण को प्रभावित करती है स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी कीजिए : (6;6,6)

(i) बालाघात

(ii) भाषा व्यवहार

(iii) भाषिक अस्मिता

(iv) शब्द सामर्थ्य

6. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी कीजिए : (6,6,5)

(i) शैली

(ii) लिखित संप्रेषण

(iii) इंटरनेट

(iv) ब्लॉग

(100)

(x) चीनी

(xi) दही

(xii) मेज

(xiii) कम्बल

(xiv) ताजमहल

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4105 **J**

Unique Paper Code : 2051001004

Name of the Paper : Ability Enhancement Course Hindi (AECs) D

Name of the Course : **AEC**

Semester : II

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

समय : 2 घण्टे पूर्णांक : 60

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. **All** questions are compulsory.
3. Answers may be written either in English or Hindi; but the same medium should be used throughout the paper.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

P.T.O.

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

3. इस प्रश्न–पत्र का उत्तर अंग्रेजी या हिंदी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

खण्ड क / (PART A)

1. निम्नलिखित वर्णों में से 3 स्वर एवं 3 व्यंजन चुनकर अलग–अलग लिखिए – (6)

(Choose any 3 vowels and 3 consonants from the following alphabets and write them separately)

ऐ, ख, प, अ, छ, ड, इ, थ, भ, औ

2. निम्नलिखित शब्दों में संयुक्त व्यंजनों के प्रयोग वाले 6 शब्द चुनकर लिखिए – (6)

(Choose and write any 6 words from the following words using compound consonants.)

ज्ञान, परिश्रम, शलगम, अक्षर, पात्र, वस्त्र, अज्ञात, श्रीमान्, परिपत्र, उदाहरण

(xiv) Sheet

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं 12 शब्दों का अंग्रेजी पर्याय लिखिए – (12)

Write English Synonym of any 12 given words.

(i) हाथ

(ii) नाम

(iii) अनानास

(iv) सेब

(v) प्याज

(vi) सफेद

(vii) दीपावली

(viii) ग्रीष्म

(ix) पत्नी

Write Hindi Synonym of any 12 words from the given words.

(i) Carrot

(ii) Brinjal

(iii) Watermelon

(iv) Blue

(v) Orange

(vi) Rakshabandhan

(vii) Friday

(viii) Sister

(ix) Eye

(x) Aunt

(xi) Tongue

(xii) Milk

(xiii) Chair

3. (क) किन्हीं 3 शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करके लिखिए – (3)

Write any 3 words using anuswara at the appropriate place.

जगल, पचायत, शख, मच, बदर, चदन।

(ख) किन्हीं 3 शब्दों में उचित स्थान पर अनुनासिक का प्रयोग करके लिखिए – (3)

Write in any three words using anunasik at the appropriate place.

मुह, हस, मुग, जाच, पूछ, आख

4. (क) दिए गए वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाइए – (3)

Put appropriate punctuation marks in the given sentences.

(i) पिताजी बाजार गये (।/–/!)

(ii) आह तुमको चोट लगी (?/,/।)

(iii) दाल बाटी और चूरमा राजस्थान का प्रसिद्ध भोजन है (।/,/?)

(ख) दिए गए विराम चिह्नों के नाम लिखिए - (3)

Name the given punctuation marks.

(i) !

(ii) ।

(iii) ?

5. (क) दिए गए वाक्यों में से 6 संज्ञा शब्द पहचानकर लिखिए - (6)

Identify and write six noun words from the given sentences.

(i) सुनीता ने एक सेब खाया।

(ii) प्रत्येक प्राणी को स्वतन्त्रता प्रिय है।

(iii) किसान अपने खेतों में काम कर रहा है।

(iv) ताजमहल आगरा में है।

(v) आज बहुत गर्मी है।

(vi) लोमड़ी बहुत चतुर होती है।

(ख) दिए गए वाक्यों में से 6 सर्वमाम शब्द पहचानकर लिखिए - (6)

Identify and wnte six pronoun words from the given sentences.

(i) शायद कोई आया है।

(ii) तुम कहाँ जा रहे हो।

(iii) मेरे घर में तोता है।

(iv) ये मेरे पिताजी है।

(v) उसने दूध पिया।

(vi) मैं खुद गाड़ी चलाती हूँ।

खण्ड ख / (PART B)

6. (क) निम्नलिखित में से किन्हीं 12 शब्दों का हिंदी पर्याय लिखिए - (12)

This question paper contains 2 printed pages

Roll No. ....

S. No. of Question Paper : **4183A**

Unique Paper Code : **2051001006**

Name of the Paper : **HINDI- E : Compulsory Hindi Syllabus (CHS)**

Course : **Common Prog. Group : AEC**

Semester : **II**

समय : **2 घंटे** पूर्णांक : 60

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य है|

1. अपने परिवार के विषय में 10 वाक्य लिखिए। **(10)**

अथवा

अपने दिनचर्या को 10 वाक्य में लिखिए।

2. आपके साथ पिछले दिनों हुई दुर्घटना की जानकारी अपने मित्र को फोन पर दें। **(10)**

अथवा

जूते की दुकान पर खरीदारी हेतु की गई बातचीत को 50 शब्दों में लिखिए|

3. मेट्रो में की गई यात्रा के अनुभव को 10 वाक्य में लिखिए| **(10)**

अथवा

रास्ता पूछने के लिए ऑटो चालक से की गई वार्ता को 10 वाक्य में लिखिए।

4. निम्नलिखित वर्णों में से **तीन** स्वर एवं तीन व्यंजन पहचानकर लिखिए - **(6)**

ऐ, क, उ, इ, य, व, अ, ट, स, ओ

5. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं **छह** के वचन बदलिए - **(6)**

सड़क, लड़के, दीवार, कुर्सी, किताबें, आँख, बच्चे, नदियाँ ।

6. निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं **छह** सर्वनाम शब्दों को पहचानकर लिखिए - **(6)**

1. तुम घर नहीं जाओगे।

2. वह मेरी बहन है।

3. आप मेरे गुरु हैं।

4. वहाँ एक पुस्तक रखी है।

5. उसे बुलाओ।

6. वह लड़का बहुत बुरा है।

7. किसी ने गोलियाँ चलाईं|

8. यह घर किसका है?

7. दिए गए वाक्यों में से किन्हीं **छह** विशेषण शब्दों को पहचानकर लिखिए - **(6)**

1. सड़क पर काली घोड़ी भाग रही है।

2. मेरी कक्षा का एक लड़का बहुत प्रतिभावान है।

3. यह मेरा बड़ा भाई है।

4. कुछ बच्चे डरपोक होते हैं।

5. संतरा खट्टा है।

6. मेरी छोटी बहन बहुत सुन्दर है।

7. फलों में आम सबसे मीठा होता है।

8. प्रतिदिन योग करने से आदमी स्वस्थ हो जाता है।

8. निम्नलिखित शब्दों में से **छह** क्रिया शब्दों को पहचानकर लिखिए - **(6)**

हँसना, चिड़िया, पढ़ना, मालिक, देखना, खाना, राजा, रोना, शेर, लिखना।

******

4. "सारंग" का विस्तार से परिचय दीजिए। 15

अथवा

'दो मूँडों की दोणी' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. 'लोकनाट्य' की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। 15

अथवा

राजस्थान का 'ख्याल' को लोक नाट्य के संदर्भ में विश्लेषण कीजिए।

6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 7+7=14

(क) बिदेसिया

(ख) नौटंकी

(ग) जंतसारी

(घ) लोरिक

***

 500

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **7749** **I**

Unique Paper Code : 2052201202

Name of the Paper : Hindi Ka Maukhik Sahitya Aur Uski Parampara

Name of the Course : **B. A. (Prog.) Hindi-DSC (A OR B)**

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(1) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(2) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 8+8=16

(क) करि के गइलन बलमुआँ निरासा।
गवना करा के सँइया घरे छोड़ि दिहलन,
गवना बिदेस हमें करि के बेकासा। निरासा.....
सँइयाँ के सुख हमें कुछुओ ना जनलीं,

P.T.O.

बिचहीं बिधाता बितवलन तमासा, निरासा
सतदेव सत रांखऽ अरज करति हूँ,
दुखँ में दया करऽ शंकर, जरा-सा, निरासा...
कहत 'भिखारी' भगवती सहाय होखऽ,
सँइया मिलो के पुरा देहु आसा निरासा

अथवा

(i) मचियै बैठी कौसिल्या रानी, हरिनी अरज करइ हो।

रानी मंसुआ त सीझंहि करहिया, खलेरिया हम्मै उतिउ।।

(ii) पेड़वा सें टंगवेउ खलरिया, त हेरि फेरि देखतेउँ हो।

रानी, देखि देखि मन समझाउतिउँ, जनक हरिना जियतइ।

(ख) 'आपणे तो पाणी कांडो घोडाँ ऊठाँ ताँईं।' जको सागे छोटो सो चढ़त हो, अब सिक्का पाणी काटण ल्याग्या। सो काछवो पाणी पर तिरहो। जको चंड़स में आगो, जणाँ लोग मार गेरयी। जणाँ रिसालदार बोल्यो– 'घोड़ाँ के मेखाँ रोपो, मेख कोठीर पाटडोंगो वार नीसर के भाजी। जणँ बीने बी सारली, अब बठेई गेरेंदी राजा चल्यो गो। दिनगे गादढ़ियो पाछे आयो। आवकी दोम्याँ ने हेला मर्यो कहि– 'अरे भाएला आज्यावो,

राजा तो गयो। जणँ अब बोले कुँण। गादड़ियो उने उने देख्यो, तुम दोनुँ कुअ के सारेई मरया पडया था। जणाँ गादडियो देखके बोल्यो :

आसीतो कुवा में गई अर, साठ घुरिके माँए।
सो जीतए बाप, सँइसींज का जाँगो।

अथवा

राजा साहब ठीक ते बइठिके ओहसे कहेनि कि अब अपनी कहानी शुरू करौ। लेकिन एकु बात जानि लेव कि जो तुम हमका हारी न मनवाए पइहौ तो मुम्हार मूँड काटि लीन जाई। वे कहेसि कि हमैं मंजूर है। लेकिन सुनती बेरिया कूँकरी मरत जाएव। राजा बोले–बहुत अच्छा।

2. मौखिक साहित्य की सामान्य विशेषताएँ लिखिए। 15

अथवा

लोक कथा से आप क्या समझते हैं। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

3. संस्कार गीत से क्या अभिप्राय है। मंगलगीत का महत्व बताइए। 15

अथवा

पाठ्यक्रम में निर्धारित घुघुती का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

3. भ्रमरगीत के आधार पर सूरदास के विरह काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

पदों के आधार पर बिहारी के काव्य की समीक्षा कीजिए।

4. रीतिमुक्त काव्य में घनानंद का स्थान निर्धारित कीजिए। 15

अथवा

वीररस के कवि के रूप में भूषण का विवेचन कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी कीजिए : 2×9=18

(i) सुन्दरकाण्ड में सीता की मनोदशा

(ii) सूरदास की भाव तरलता

(iii) केशवदास का आचार्यत्व

(iv) बिहारी का शब्द चयन

(v) घनानंद का विरह

(vi) भूषण का ओज काव्य

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **6464 I**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : हिंदी कविता : सगुण भक्ति काव्य एवं रीतिकालीन काव्य

Name of the Course : **बी० ए० (विशेष) हिंदी** – DSC

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 3×9=27

(क) बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बार्पी सोहहीं।
नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं।।
कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं।।

अथवा

कौन हो कित कूं चले कित जात हो केहि काम जू ?
कौन की दुहिता बहू कहि कौन की यह बाम जू।।
एक गाँउ रहो कि साजन मित्र बन्धु बखानिये।
देश के परदेश के किधौं पंथ की पहिचानिये।।

(ख) गोकुल सबै गोपाल-उदासी।
जोग-अंग साधत जे ऊधो ते सब बसत ईसपुर कासी।
यद्यपि हरि हम तजि अनाथ करि तदपि रहति चरननि रसरासी।
अपनी सीतलताहिं न छाँडत यद्यपि हैं ससि राहु-गरासी।।
का अपराध जोग लिखि पठवत प्रेम भजन तजि करत उदासी।।
सूरदास ऐसी को बिरहिन माँ गति मुक्ति तजे गुनरासी ?

अथवा

घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि-पुंज।
जमुना-तीर तमाल-तरु-मिलित मालती-कुंज।।
उन हरकी हँसि कै इतै, इन सौंपी मुसकाई।
नैन मिलैं मन मिलि गए, दोउ मिलवति गाइ।।

(ग) पहलें अपनाय सुजान सनेह सौं क्यों फिरि तेह कै तोरियै जू।
निरधार अधार दै धार-मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनँद आपने चातिक कों गुन-बाँधिलैं मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कैं ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मैं यौं बिष घोरियै जू।।

अथवा

इंद्र जिमि जंभ पर बाडव सु अंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुल राज है।
पौन बारिबाह पंर संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुम-दंड पर चीता मृग-झुंड पर,
भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
यौं म्लेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।।

2. सुन्दरकाण्ड के आधार पर हनुमान के बुद्धि कौशल को समझाइए। 15

अथवा

हिंदी रीतिकाव्य के विकास में आचार्य केशवदास की भूमिका पर विचार कीजिए।

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **7673**

Unique Paper Code : **2052201201**

Name of the Paper : **Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunik kal)**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi-DSC**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) कबीर माला पहर्‌यां कुछ नहीं, गांठि हिरदा की खोइ।
हरि चरनौं चित्त राखिये, तौ अमरापुर होइ॥
कबीर केसौं कहा बिगाड़िया, जे मूंड़े सौ बार।
मन कौं काहे न मूड़िए, जामैं बिषैं विकार॥

अथवा

सिखवति चलन जसोदा मैया।
अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाइ धरनी धरे पैया।
कबहुँक सुंदर बदन विलोकित, उर आनंद भरि लेत बलैया।
कबहुँक कुल देवता मनावति, चिरजीवहु मेरी कुँवर कन्हैया।
कबहुँक बल कौं टेरि बुलावति, इहिं आँगन खेलौ दोउ भैया।
सूरदास स्वामी की लीला, अति प्रताप बिलसत नँदरैया।

(ख) एक भरोसे, एक बल, एक आस विस्वास।
एक राम-घनस्याम हित चातक तुलसीदास॥
तुलसी अपनो आचरन भलो न लागत कासु।
तेहि न बसात जो खात नित लहसुनह को बासु॥

अथवा

अंग-अंग नग जगमगत दीपशिखा-सी देह।
दिया बढाऐं हूँ रहै बड़ौ उज्यारौ गेह।
केसरि कै सरि क्यौं सकैं, चंपकु कितुक अनुपु ।
गात-रूपु लखि जातु दुरि जातरूप कौ रूपु।

(ग) जब याद आती है बड़ों के उन सपूतों की कथा,
उनके सखा, संगी, विदूषक और दूतों की कथा।
तब निकल पड़ते हैं हृदय से वचन ऐसे दुख भरे-
होवें न ऐसे पुत्र चाहे हो कुल-क्षय हे हरे!॥

अथवा

जीवन में एक सितारा था
माना वह बेहद प्यारा था
वह डूब गया तो डूब गया
अंबर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है
जो बीत गई सो बात गई।

2. कबीर ने अपने काव्य में सामाजिक बुराइयों का विरोध किया है। स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

पाठ्यक्रम में निर्धारित तुलसी के दोहों का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. बिहारी के दोहों के कला-पक्ष को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'बीती विभावरी जाग री' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. हरिवंश राय बच्चन का साहित्यिक परिचय लिखिए। 15

अथवा

'उनको प्रणाम' कविता की मूल-संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 8,7

(i) सूरदास की भक्ति-भावना

(ii) 'रईसों के सपूत' का उद्देश्य

(iii) 'हिमालय के आँगन में' कविता का मूल कथ्य

(iv) 'गीत फ़रोश' कविता का सारांश।

3. बिहारी ने अपने काव्य में 'गागर में सागर' भर दिया है–इस कथन पर विचार कीजिए। 15

अथवा

'बीती विभावरी जाग री' कविता में व्यक्त प्रकृति–चित्रण पर प्रकाश डालिए।

4. 'जो बीत गई सो बात गई' कविता की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 15

अथवा

'उनको प्रणाम' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 8, 7

(i) गोकुल लीला का भाव–सौंदर्य

(ii) रईसों के सपूत कविता का सार

(iii) आँगन में' कविता का मूल कथ्य

(iv) 'गीत फ़रोश' की भाषा–शैली।

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **7714 I**

Unique Paper Code : 2052201201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunik kal)

Name of the Course : **B.A.(Prog.) Hindi DSC**

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न–पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) कबीर माला काठ की, कहि समझावे तोहि।
मन न फिरावै आपणां, कहा फिरावै मोहि।,
कबीर माला पहरयां कुछ नहीं, गंठि हिरदा की खोइ।
हरि चरनौं चित्त राखिये, तौ अमरापुर होइ।।

अथवा

हरि अपनैं आँगन कछु गावत।
तनक-तनक चरननि सौं नाचत, मनहिं मनहिं रिझावत।
बाँह उठाइ काजरी-धौरी, गैयनि टेरि बुलावत।
कबहुँक बाबा नंद पुकारत, कबहुँक घर मैं आवत।
माखन तनक आपनैं कर लै, तहक बदन में नावत।
कबहुँक चितै प्रतिबिंब खंभ मैं, लौनी लिए ख़वावत।
सूर स्याम के बाल चरित, नित नितही देखत भावत।।

(ख) जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौं नाँहि।
ज्यौं आँखिनु सबु देखियै, आँखि न देखी जाँहिं।।
मकराकृत गोपाल कैं, सोहत कुँडल कान।
घँरयौं मनौ हिय-धर समरु, ड्योढ़ी लसत निसान।।

अथवा

श्रीमान् शिक्षा दें उन्हें तो श्रीमती कहती वहीं-
''घेरों न लल्ला को हमारे, नौकरी करनी नहीं।''
शिक्षे ! तुम्हारा नाश हो, तुम नौकरी के हित बनी,
लो मूर्खते ! जीती रहो, रक्षक तुम्हारे हैं घनी।।

(ग) तीतर, नवले, मेड़े, पतंगे वे लड़ाते हैं कभी,
वे दूसरे के व्यर्थ झगड़े मोल लाते हैं कभी।
दस-बीस उनके दुर्व्यसन हों तो गिने भी जा सकें,
पथ पर पिषम है, कौन ऐसा, वे न जिस पर आ सकें।

अथवा

जीवन में मधु का प्याला था
तुमने तन मन दे डाला था
वह टूट गया तो टूट गया
मदिरालय का आंगन देखो
कितने प्याले हिल जाते हैं
गिर मिट्टी में मिल जाते हैं
जो गिरते हैं कब उठते हैं
पर बोलो टूटे प्यालों पर
कब मदिरालय पछताता है
जो बीत गई सी बात गीई

2. कबीर काव्य की मुख्य विशेषताओं का परिचय दीजिए। 15

अथवा

तुलसीदास कृत 'दोहावली' में वर्णित दोहों का सार अपने शब्दों में लिखिए।

[This question paper contains 2 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **6497** **I**

Unique Paper Code : 2052101202

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Adhunik Kal)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi-DSC-5**

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

Instructions for Candidates :

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास में भारतेंदु का महत्व प्रतिपादित कीजिए। 18

अथवा

हिंदी पत्रकारिता और खड़ी बोली आन्दोलन में महावीर प्रसाद द्विवेदी की महती भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. हिंदी उपन्यास की विकास-यात्रा का विवेचन कीजिए। 18

अथवा

हिंदी नाटक विधा की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए।

3. उत्तर छायावादी कविता की प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए। 18

अथवा

नई कविता की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4. समकालीन कविता की मुख्य विशेषताओं की विवेचना कीजिए। 18

अथवा

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श के विभिन्न आयामों का परिचय दीजिए।

5. हिन्दीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 9+9=18

(क) नवजागरण एवं भारतेंदु

(ख) संस्मरण

(ग) प्रगतिवाद

(घ) नवगीत

(ङ) स्त्री विमर्श

***

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5240 **J**

Unique Paper Code : 2054001203

Name of the Paper : Patkatha Aur samvaad Lekhan

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (GE)**

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. पटकथा की परिभाषा देते हुए पटकथा की अवधारणा का विश्लेषण कीजिए। (18)

अथवा

'पटकथा पट के लिए लिखी गई कथा है' इस कथन के आलोक में पटकथा के स्वरुप पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

2. पटकथा की दृष्टि से किसी फ़ीचर फिल्म की पटकथा की समीक्षा कीजिए। (18)

अथवा

किसी डॉक्यूमेंट्री की पटकथा लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

3. संवाद किसे कहते हैं? संवाद लेखन की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए? (18)

अथवा

कथा-आधारित दृश्य-श्रव्य विधाओं के लिए संवाद लेखन के महत्व पर प्रकाश डालिए।

4. डॉक्यूमेंट्री और फ़ीचर फ़िल्म के संवाद लेखन में क्या अन्तर है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (18)

अथवा

बाल धारावाहिक के लिए संवाद लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए: (9+9=18)

(क) पटकथा लेखन के तत्व

(ख) डॉक्यूमेंट्री और फीचर फिल्म की पटकथा में अंतर

(ग) संवाद संरचना

(घ) धारावाहिक के लिए संवाद लेखन

(400)

This question paper contains 2 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5235**

Unique Paper Code : **2054000029**

Name of the Paper : **साहित्यालोचन**

Name of the Course : **GE : Hindi**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कथा-साहित्य को परिभाषित करते हुए उपन्यास के विकास पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

प्रबंधकाव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए प्रबंधकाव्य एवं खंडकाव्य में भेद स्पष्ट कीजिए।

2. शब्दशक्ति किसे कहते हैं ? अभिधा शब्दशक्ति के भेद बताइए। 15

अथवा

काव्यगुणों से आप क्या समझते हैं ? माधुर्यगुण का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

3. रस के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उसके प्रमुख भेदों का वर्णन कीजिए। 15

अथवा

अलंकार की परिभाषा बताते हुए किन्हीं **तीन** शब्दालंकारों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

P.T.O.

4. बिंब से आप क्या समझते हैं ? बिंब के प्रमुख भेदों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए। 15

अथवा

यथार्थवाद और जादुई यथार्थवाद की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 10×3

(1) खंडकाव्य

(2) डायरी

(3) छंद

(4) काव्य-दोष

(5) विसंगति।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4159 **J**

Unique Paper Code : 2051001003

Name of the Paper : Social Media 'aur Blog Lekhan (Hindi-C)

Name of the Course : **Common Prog. Group - AEC**

Semester : II

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सोशल मीडिया का अर्थ बताते हुए इसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

सोशल मीडिया के प्रकार लिखिए । (12)

2. पर्यावरण संरक्षण विषय पर सोशल मीडिया के लिए विज्ञापन प्रस्तुत कीजिए ।

P.T.O.

अथवा

समाज पर सोशल मीडिया के प्रभाव का चित्रण कीजिए। (12)

3. ब्लॉग लेखन का परिचय देते हुए सोशल मीडिया में ब्लॉग लेखन का स्थान उल्लिखित कीजिए।

अथवा

विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का चित्रण कीजिए। (12)

4. ब्लॉग निर्माण की प्रक्रिया का उल्लेख कीजिए।

अथवा

सोशल नेटवर्किंग साइट्स की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (12)

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (6,6)

(क) व्हाट्सएप का प्रभाव

(ख) फेसबुक का महत्व

(ग) यूट्यूब और रोज़गार

(घ) निजता और सोशल मीडिया

अथवा

'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता का मुख्य अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

4. 'भिक्षुक' कविता के भाव-पक्ष पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'भारत माता ग्राम वासिनी' कविता के आधार पर पंत की काव्य-चेतना का मूल्यांकन कीजिए।

5. 'पूछता क्यों शेष कितनी रात?' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'ठुकरा दो या प्यार करो' कविता के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 6074 **J**

Unique Paper Code : 2052102402

Name of the Paper : Aadhunik Hindi Kavita (Chhayawad Tak)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।**

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) सुंदर बानी कहि समुझावै।
बिधवागन सों नेह बढ़ावै ।।
दयानिधान परम गुन - आगर।
सखि सज्जन नहिं 'विद्यासागर' ।।

अथवा

सबसे प्रथम कर्त्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में,

शिक्षा बिना ही पड़ रहे हैं आज हम सब क्लेश में।

शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है,

शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है ।।

(ख) कैसी मधुर मनोहर उज्जवल है यह प्रेम-कहानी।

जी में है अक्षर बन इसके बनूँ विश्व की बानी।

स्थिर, पवित्र, आनंद-प्रवाहित, सदा शांति सुखकर है।

अहा! प्रेम का राज्य परम सुन्दर, अतिशय सुंदर है ।।

अथवा

तम-नयनों की ताराएँ सब -

मुंद रही किरण दल में हैं अब,

चल रहा सुखद यह मलय बात!

अब जागो जीवन के प्रभात!

(ग) आम की यह डाल जो सूखी दिखी,

कह रही है - "अब यहाँ पिक या शिखी

नहीं आते, पंक्ति में वह हूँ लिखी

नहीं जिसका अर्थ - जीवन दह गया है।"

अथवा

कह दे अतीत अब मौन त्याग,

लंके, तुझमे क्यों लगी आग ?

ऐ कुरुक्षेत्र! अब जाग, जाग,

बतला अपने अनुभव अनंत,

वीरों का कैसा हो वसंत ?

2. 'नये जमाने की मुकरी' का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'भारत-भारती' के (भविष्यत् खंड) में निहित जीवन-दृष्टि का परिचय दीजिए।

3. 'पथिक' कविता में व्याप्त प्रकृति-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए। (15)

2. व्यंग्य विधा का परिचय देते हुए उसकी विकास-यात्रा को रेखांकित कीजिए।

अथवा

हिंदी एकांकी का परिचय देते हुए उसकी की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'मलबे का मालिक' कहानी के आधार पर रक्खा पहलवान का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'नमक का दारोग़ा' कहानी में अभिव्यक्त आदर्शवाद को स्पष्ट कीजिए। (15)

4. 'भाव या मनोविकार' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' के आधार पर विद्यानिवास मिश्र की निबंध-शैली को स्पष्ट कीजिए। (15)

5. 'दीपदान' एकांकी के आधार पर पन्ना के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

सुभद्रा की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए -

(क) संस्मरण

(ख) स्वतंत्रता-पूर्व हिंदी निबंध (6)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4725 **J**

Unique Paper Code : 2055002001

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (A)

Name of the Course : **B.A. Prog. – GE**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (8×3=24)

(क) धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव-दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुँझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल-उछल कर आक्रमण करने शुरू किए। एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पंद्रह और पंद्रह से बीस हज़ार तक नौबत पहुँची, किंतु धर्म अलौकिक वीरता के साथ इस बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भाँति अटल, अविचलित खड़ा था।

अथवा

पूरे साढ़े सात साल के बाद वे लोग लाहौर से अमृतसर आए थे। हॉकी का मैच देखने का तो बहाना ही था, उन्हें ज्यादा चाव उन घरों और बाज़ारों को फिर से देखने का था, जो साढ़े सात साल पहले उनके लिए पराए हो गए थे। हर सड़क पर मुसलमानों की कोई-न-कोई टोली घूमती नज़र आ रही थी। उनकी आँखें इस आग्रह के साथ वहाँ की हर चीज देख रही थीं, जैसे वह शहर साधारण न होकर एक ख़ास आकर्षण-केंद्र हो।

(ख) मन फिर घूम गया कौसल्या की ओर, लाखों-करोड़ों कौसल्याओं की ओर, और लाखों-करोड़ों कौसल्याओं के द्वारा मुखरित एक अनाम-अरूप कौसल्या की ओर। इन सबके राम बन में निर्वासित हैं, पर क्या बात है कि मुकुट अभी भी उनके माथे पर बँधा है और उसी के भीगने की इतनी चिंता है? क्या बात है कि आज भी काशी की रामलीला आरंभ होने के पूर्व एक निश्चित मुहूर्त में मुकुट की ही पूजा सबसे पहले की जाती है? क्या बात है कि तुलसीदास ने 'कानन' को 'सत अवध समाना' कहा और चित्रकूट में पहुँचने पर ही उन्हें 'कलि की कुटिल कुचाल' दीख पड़ी? क्या बात है कि आज भी वनवासी धनुर्धर राम ही लोकमानस के राजा राम बने हुए हैं।

अथवा

मनोविकारों या भावों की अनुभूतियाँ परस्पर तथा सुख या दु:ख की मूल अनुभूति से ऐसी ही भिन्न होती हैं, जैसे रासायनिक मिश्रण परस्पर तथा अपने संयोजक द्रव्यों से भिन्न होते हैं। विषय-बोध की विभिन्नता तथा उससे संबंध रखने वाली इच्छाओं की विभिन्नता के अनुसार मनोविकारों की अनेकरूपता का विकास होता है। हानि या दु:ख के कारण में हानि या दु:ख पहुँचाने की चेतन-वृत्ति का पता पाने पर हमारा काम उस मूल अनुभूति से नहीं चल सकता, जिसे दु:ख कहते हैं, बल्कि उसके योग से संघटित क्रोध नामक जटिल भाव की आवश्यकता होती है।

(ग) उन्होंने एक क्षण के लिए भी इस असत्य को स्वीकार नहीं किया कि जातिवाद की संकीर्ण तुला पर ही बर की योग्यता तोली जा सकती है। इतना ही नहीं, जिस कन्यादान की प्रथा का सब मूक-भाव से पालन करते आ रहे थे, उसी के विरुद्ध उन्होंने घोषणा की, "मैं कन्यादान नहीं करूँगी। क्या मनुष्य मनुष्य को दान करने का अधिकारी है? क्या विवाह के उपरांत मेरी बेटी मेरी नहीं रहेगी?" उस समय तक, किसी ने, और विशेषत: किसी स्त्री ने, ऐसी विचित्र और परंपरा-विरुद्ध बात नहीं की थी।

अथवा

लाल! तुम्हारी माला मैं नहीं गूँथ सकी। तुम्हारा जीवन अधूरा होने जा रहा है तो माला कैसे पूरी होती? आज तुम भूखे ही रह गए, मेरे लाल! आज अंतिम दिन मैं तुम्हें अपने हाथों से भोजन भी न करा सकी! तुम क्या जानो कि कल तुम और कुँवर साथ-साथ कैसे भोजन करोगे! कहते थे, कल तुम परोसकर खिलाना। अब मैं कैसे खिलाऊँगी, चंदन!

2. 'लोभ और प्रीति' निबंध के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'बसंत आ गया' निबंध के कथ्य को स्पष्ट कीजिए।

3. 'प्रेमचंद के साथ दो दिन' संस्मरण का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'ठकुरी बाबा' संस्मरण की मुख्य पात्र 'भक्तिन' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. रेडियो नाटक के तत्वों के आधार पर 'वैष्णव जन' ध्वनि रूपक पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'शायद' एकांकी का सार लिखिए।

5. 'अंगद का पांव' व्यंग्य की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'ठेले पर हिमालय' यात्रावृत्त की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

(2000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 7320 **J**

Unique Paper Code : 2052202401

Name of the Paper : अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (10+10+10=30)

(क) किसी स्त्री या पुरुष के रूप की प्रशंसा सुनते ही पहला भाव लोभ का होगा। किसी को हमने बहुत सुंदर देखा और लुभा गए; उसके पीछे दूसरे को उससे भी सुंदर देखा तो उस पर लुभा गए। जब तक प्रवृत्ति का यह व्यभिचार रहेगा, तब तक हम रूपलोभी ही

माने जाएँगे। जब हमारा लोभ किसी एक ही व्यक्ति पर स्थिर हो जाएगा, हमारी वृत्ति एकनिष्ठ हो जाएगी, तब हम प्रेमी कहे जाने के अधिकारी होंगे। पर साधारणत: मन की ललक यदि वस्तु के प्रति होती है तो लोभ:, और किसी प्राणी या मनुष्य के प्रति होती है तो प्रीति कहलाती है।

अथवा

एक मित्र ने उसी स्थान में एक मल्लिका का गुल्म भी लगा रखा है, जो किसी प्रकार बस़ जी रहा है। दो करबीर और एक कोविदार के झाड़ भी उन्हीं मित्र की कृपा के फल हैं, पर वे बुरी तरह चुप हैं। कहाँ भी उल्लास नहीं, उमंग नहीं और उधर कवियों की दुनिया में हल्ला हो गया, प्रकृति रानी नया शृंगार कर रही है, और फिर जाने क्या क्या। कवि के आश्रम में रहता हूँ। नितांत ठूँठ-नहीं हूँ; पर भाग्य प्रसन्न न हो तो कोई क्या करे?

(ख) लखनऊ के आठ वर्ष पुराने प्रेमचन्दजी और काशी के प्रेमचन्दजी की रूपरेखा में विशेष अंतर नहीं पड़ा। हाँ मूँछों के बाल जरूर 53 फीसदी सफेद हो गए हैं। उम्र भी करीब करीब इतनी ही है। परमात्मा उन्हें शतायु करे, क्योंकि हिंदी वाले उन्हीं की बदौलत आज दूसरी भाषा वालों के सामने मूँछों पर ताव दे सकते हैं।

अथवा

मेरे चारों ओर न जाने कितने जंगली पेड़ पौधे, पक्षी आदि मेरे सामान्य जीवनं प्रेम के कारण ही पनपते जीते रहते हैं। जिसका दूध लग जाने से आँख फूट जाती है, वह थूहर भी मेरे सयन लगाये आम के पार्थ में गर्व से सिर उठाये खड़ा रहता है। धंसकर न निकलने वाले कांटों से जड़ा हुआ भटकटैया-, सुनहले रेशम के लच्छों में ढके और उजले कोमल मोतियों से जड़े मक्का के भुट्टे के निकट साधिकार आसन जमा लेता है।

(ग) वैष्णव जन वह है जो पैर दुख भंजक होता है। फिर भी निरभिमानी रहता है गांधी जी से अधिक दूसरे के दुख दर्द को समझने वाला कौन है। हम उन्हें राष्ट्रपिता कहते हैं। मानते हैं, उन्होंने देश को स्वाधीन कराया। परंतु उनका लक्ष्य था मनुष्य के दुख दर्द को दूर करना। स्वाधीनता तो लक्ष्य को पाने का साधन-मात्र थी।

अथवा

सामान रखा जा चुका था, टिकट खरीदा ही जा चुका था। मालाएँ डाली ही जा चुकी थीं। हाथ या गत्ते या दोनों मिल ही चुके थे और गाड़ी चलने का नाम तक न लेती थी। थियेटर में जब हीरो पर बार करने के लिए विलेन खंजर तान कर तिरछा खड़ा हो जाता है उस वक्त परदे की डोरी अटक जाए तो सोचिए क्या होगा? कुछ वैसी ही हालत थी। परदा नहीं गिर रहा था।

अथवा

'बसंत आ गया' निबंध के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए।

3. 'प्रेमचंद के साथ दो दिन' संस्मरण के आधार पर प्रेमचंद के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'ठकुरी बाबा' संस्मरण का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

4. 'वैष्णव जन' ध्वनि रूपक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'शायद' एकांकी की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए।

5. 'अंगद का पांव' व्यंग्य की भाषा शैली की विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

यात्रावृत्त के तत्वों के आधार पर 'ठेले पर हिमालय' की समीक्षा कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 7434 **J**

Unique Paper Code : 2052202401

Name of the Paper : अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।**

1. निम्नलिखित अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (10+10+10=30)

(क) लक्ष्य की इस एकता से समाज में एक दूसरे की आँखों में खटकनेवाले लोभ की वृद्धि हुई। जब एक ही को चाहने वाले बहुत से हो गए तब एक की चाह को दूसरे कहाँ तक पसंद करते लक्ष्मी ! की मूर्ति धातु मयी हो गई, उपासक सब पत्थर के हो गए। धीरे धीरे यह दशा आई कि जो बातें-पारस्परिक प्रेम की दृष्टि से, धर्म की दृष्टि से, की जाती थीं, वे भी रुपये पैसे की दृष्टि से होने-लगी।

अथवा

पढ़ता लिखता हूँ। यही पेशा है। सो दुनिया के बारे में पोथियों के सहारे ही थोड़ा बहुत जानता हूँ। पढ़ा हूँ, हिन्दुस्तान के जवानों में कोई उमंग नहीं है, इत्यादि इत्यादि। इधर देखता हूँ कि पौधे और भी बुरे हैं। सारी दुनिया में हल्ला हो गया कि वसंत आ गया। पर इन कमबख्तों-पेड़ों को खबर ही नहीं। कभी कभी सोचता हूँ कि इनके पास तक सन्देश पहुँचाने का क्या कोई साधन नहीं हो सकता।

(ख) प्रेमचन्दजी में मानसिक स्फूर्ति चाहे कितनी ही अधिक मात्रा में क्यों न हो, शारीरिक फुर्ती का प्राय: अभाव ही है। यदि कोई भला आदमी प्रेमचन्दजी तथा सुदर्शनजी को एक मकान में बंद कर दे, तो सुदर्शनजी तिकड़म भिड़ाकर छत से नीचे कूद पड़ेंगे और प्रेमचन्दजी वहीं बैठे रहेंगे। यह दूसरी बात है कि प्रेमचन्दजी वहाँ बैठे-बैठे कोई गल्प लिख डालें।

अथवा

कोठरी का द्वार जिसमें खुलता था, वह अभ्यागतों के लिए बैठकखाना बना दिया गया। इस प्रकार सब बन चुकने पर भक्तिन का टाट और मेरी शीतल पाटी, उसकी धुंधली लालटेन और मेरा पीतल के दीवट में झिलमिलाने वाला दिया, उसकी रांगे जैसी-जैसी बाल्टी और मेरी लपट चमकती हुई तांबे की कलशी, उसकी हल्दी, धनिया, आटा, दाल आदि की भौतिकता से भरी मटकियाँ और मेरे न जाने कब के पुरातन तथा सूक्ष्म ज्ञान से आपूर्ण संस्कृत ग्रंथ आदि से वह दम बस गई। - पर्णकुटी एक

(ग) गांधी जी जीवन भर गंदे को साफ बनाते रहे। शब्द से नहीं कर्म से। जो कर्म करता है वही वैष्णव जन है। वह किसी की निंदा नहीं करता। 'निंदा न करे कैनी रे'। एक दिन सूत कातने के बाद वे उसे लपेटे पर लपेटने जा रहे थे किसी जरूरी कम बाहर ज़ाना पड़ा। जाते समय अपने स्टेनो श्री सुबैया से बोले -

सूत लपेट कर उतार लेना, तार गिन लेना और प्रार्थना के समय से पहले मुझे बता देना।

अथवा

उसके मन पर हिमालय की बर्फ एक ऐसी खरोंच छोड़ जाती है जो हर बार याद आने पर हृदय में पीड़ा उठती है। मैं जानता हूँ, क्योंकि वह बर्फ मैंने भी देखी है। सच तो यह है कि सिर्फ बर्फ को बहुत निकट से देख पाने के लिए ही हम लोग कौसानी गये थे। नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से मझकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए कोसी। कोसी से एक सडक अल्मोड़े चली जाती है, दूसरी कौसानी।

2. 'लोभ और प्रीति' निबंध की भाषा पर विचार कीजिए। (15)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 6012 **J**

Unique Paper Code : 2052102401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra

Name of the Course : **B.A. (H) – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

अथवा

आचार्य कुंतक का योगदान बताते हुए वक्रोक्ति संप्रदाय का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (15)

2. 'काव्य हेतु' से क्या तात्पर्य है? भारतीय आचार्यों द्वारा प्रस्तुत काव्य हेतुओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

P.T.O.

'काव्य-लक्षण' का स्वरूप बताते हुए संस्कृत आचार्यो द्वारा निर्दिष्ट काव्य-लक्षणों पर प्रकाश डालिए। (15)

3. रस के भेद बताते हुए शृंगार रस का विवेचन कीजिये।

अथवा

साधारणीकरण का आशय स्पष्ट करते हए विभिन्न आचार्यों के मतों का विवेचन कीजिए। (15)

4. अलंकार किसे कहते हैं? शब्दालंकारों और अर्थलंकारों में भेद बताते हुए एक शब्दालंकार और एक अर्थालंकार का लक्षण उदाहरण सहित बताइए।

अथवा

शब्द शक्ति किसे कहते है? व्यंजना शब्द शक्ति की परिभाषा देते हुए उसके भेदों का उदाहरण सहित निरूपण कीजिए। (15)

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए: (10×3=30)

(i) काव्य प्रयोजन

(ii) आचार्य विश्वनाथ

(iii) सवैया एवं घनाक्षरी छंद

(iv) उत्पत्तिवाद

(v) वीर रस

(vi) यमक एवं श्लेष अलंकार

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 174 **J**

Unique Paper Code : 12053407

Name of the Paper : Bhasha aur Samaj

Name of the Course : **Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. भाषा, समाज और संस्कृति से आप क्या समझते हैं, उनके मध्य संबंधों को रेखांकित कीजिए। (15)

अथवा

'भाषा का समाजशास्त्र' की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

2. भाषा, परिवेश और जाति को स्पष्ट करते हुए सविस्तार समझाइए। (15)

अथवा

P.T.O.

भाषायी विविधता और भाषिक समुदाय के मध्य संबंधों पर प्रकाश डालिए।

3. व्यक्ति, समाज और भाषा आपस में किस प्रकार एक दूसरे से जुड़े हुए हैं? सविस्तार समझाइए। (15)

अथवा

भाषा और सामाजिक व्यवहार से आप क्या समझते हैं? उनके मध्य संबंधों को रेखांकित कीजिए।

4. भाषा सर्वेक्षण से आप क्ध्या समझते हैं, इसकी आवश्यकताओं को रेखांकित कीजिए। (15)

अथवा

भाषा नमूनों के सर्वेक्षण को स्पष्ट करते हुए उसकी प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए – (15)

(i) भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार

(ii) भाषा और जातीयता

(iii) भाषा और संस्कृति

(iv) भाषा के नवीन प्रयोग

(100)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 4508 **J**

Unique Paper Code : 2054002003

Name of the Paper : ब्लॉग लेखन

Name of the Course : **GE : Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. ब्लॉग लेखन की अवधारणा तथा उसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

अथवा

ब्लॉग लेखन के विकास क्रम और वर्तमान में उसकी भूमिका पर चर्चा कीजिए। (15)

P.T.O.

2. ब्लॉग लेखन व्यक्ति की रचनात्मकता को किस प्रकार विस्तार देता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

ब्लॉग लेखन किस प्रकार जनभागीदारी और सामाजिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गया है? (15)

3. साहित्यिक-सांस्कृतिक ब्लॉग लेखन के स्वरूप और प्रभावों पर विचार कीजिए।

अथवा

राजनीतिक और सामाजिक ब्लॉग लेखन के प्रकारों तथा उनकी विशेषताओं पर चर्चा कीजिए। (15)

4. ब्लॉग निर्माण की प्रक्रिया को चरणबद्ध रूप से स्पष्ट कीजिए।

अथवा

हिन्दी ब्लॉग लेखन में प्रचलित भाषा-शैली का विश्लेषण कीजिए। (15)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10×3=30)

(क) ब्लॉग लेखन और संस्कृति

(ख) सोशल मीडिया में ब्लॉग लेखन की भूमिका

(ग) शिक्षा और मीडिया के क्षेत्र में ब्लॉग लेखन

(घ) किसी विशिष्ट विषय पर ब्लॉग लेखन की योजना

(400)

2. हिन्दी एकांकी का सामान्य परिचय दीजिए? (15)

अथवा

हिन्दी निबंध कि विकास यात्रा बताइए?

3. 'उसने कहा था' कहानी में वर्णित प्रेम का स्वरूप स्पष्ट कीजिए? (15)

अथवा

'चीफ़ की दावत' कहानी में माँ – पुत्र के संबंध की विशेषताएँ लिखिए?

4. 'एक दुराशा' निबंध में वर्णित भारतीय जन-जीवन का उल्लेख कीजिए? (15)

अथवा

'मज़दूरी और प्रेम' नामक निबंध की समीक्षा लिखिए?

5. 'बिबिया' की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए? (15)

अथवा

एकांकी 'सूखी डाली' में वर्णित परिवार की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए?

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए: (6)

(क) हिन्दी कहानी।

(ख) निबंध 'एक दुराशा' में हास्य व्यंग्य।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4731 **J**

Unique Paper Code : 2055092002

Name of the Paper : हिन्दी गद्य: विकास के विविध चरण (ख)

Name of the Course : **B.Com. (P) GE Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (8×3=24)

(क) बड़े-बड़े शहरों के इक्के – गाड़ीवालों को जबान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गई है और पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बंबू-कार्टवालों की बोली का मरहम लगावें। जब बड़े-बड़े शहरों कि चौड़ी सड़कों पर घोड़े कि पीठ को चाबुक से धुनते हुए इक्के वाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट

का सम्बन्ध स्थिर करते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखों के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अँगुलियों के पोरों को चीथकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं। और संसार की ग्लानि, निराशा और क्षोभके अवतार बने, नाक की सीध चले जाते हैं।

अथवा

बरामदे में पहँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गए। जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे उनकी टाँगे लड़खड़ा गई, और क्षण भर में सारा नशा हिरण होने लगा। बरामदे में ऐन कोठरी के सामने माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों की त्यों बैठी थीं। मगर दोनों पाँव कुर्सी की सीट पर रखे हुए और सिर दाएँ से बाएँ और बाएँ से दाएँ झूल रहा था और मुँह से लगातार ख़र्राटों की आवाज़ें आ रही थी।

(ख) बालू में बिखरी हुई चीनी को हाथी अपने सूंड से नहीं उठा सकता, उसके लिए चिवटी की जिह्वा की दरकार है। इसी कलकत्ते में इसी इमारतों के नगर में माई की प्रजा में हजारों आदमी ऐसे हैं, जिनको रहन को सड़ा झोंपड़ा भी नहीं है। गलियों और सड़कों पर घूमते-घूमते जहाँ जगह देखते हैं वहीं पड़े रहते हैं। पहरेवाला आकर डण्डा लगाता है तो सरक कर दूसरी जगह जा पड़ते हैं। बीमार हैं तो सड़कों ही पर पड़े पांव पीटकर मर जाते हैं। कभी आग जलाकर खुले मैदान में पड़े रहते हैं।

अथवा

मेरा विश्वास है कि जिस वस्तु में मनुष्य के प्यारे हाथ लगते हैं, उसमें उसके हृदय का प्रेम और उसकी पवित्रता सूक्ष्म रूप से मिल जाती है और उसमें मुर्दे को ज़िंदा करने की शक्ति आ जाती है। होटल में बने हुए भोजन यहाँ नीरस होते हैं, क्योंकि वहाँ मनुष्य मशीन बना दिया जाता है। परन्तु अपनी प्रियतमा के हाथ से बने हुए रूखे सूखे भोजन में कितना रस होता है। जिस मिट्टी के घड़े को कन्धों पर उठाकर, मीलों दूर से उसमें मेरी प्रेममग्न प्रियतमा ठंडा जल भर लाती है; उस लाल घड़े का जल जब मैं पीता हूँ तब जल क्या पीता हूँ, अपनी प्रेयसी के प्रेमामृत को पान करता हूँ।

(ग) आत्मघात, मनुष्य की जीवन से पराजित होने की स्वीकृति है। बिबिया- जैसे स्वभाव के व्यक्ति पराजित होने पर भी पराजय स्वीकार नहीं करते। कौन कह सकता है कि उसने सब ओर से निराश होकर अपनी अन्तिम पराजय को भूलने के लिए ही यह आयोजन नहीं किया? संसार ने उसे निर्वासित कर दिया, इसे स्वीकार करके और गरजती हुई तरंगों के सामने आँचल फैलाकर क्या वह अभिमानिनी स्थान की याचना कर सकती थी?

अथवा

मंझली बहू, तुम अपनी हँसी को उन लोगों तक ही सीमित रखो बेटा, जो उसे सहन कर सकते हैं। बाहर के लोगों पर घर में बैठकर हँसा जा सकता है, किन्तु घर के लोगों को तब तक हँसी का निशाना बनाना ठीक नहीं, जब तक वे पूर्णतया घर का अंग न बन जाएँ और इन्दु बेटा, तेरी छोटी भाभी बुद्धिमती, सुशिक्षित और सुसंस्कृत है; तुझे उसकी हँसी उड़ाने, उससे लड़ने-झगड़ने के बदले उसका आदर करना चाहिए, उससे ज्ञानार्जन करना चाहिए।

[This question paper contains 2 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **4089** **I**

Unique Paper Code : 2051002003

Name of the Paper : हिंदी भाषा और तकनीक (Hindi – C)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC -2**

Semester : IV

Time : 2 Hours ***Maximum Marks : 60***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. गवर्नेंस क्या है ? इसके प्रमुख घटकों को समझाइए। 15

अथवा

कंप्यूटर राजभाषा हिंदी के प्रचार – प्रसार में सहायक है, स्पष्ट कीजिए।

2. वेब डिजाइन क्या है ? एक वेबसाइट और वेब पेज में अंतर स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

हिंदी भाषा में यूनिकोड के प्रयोग की आवश्यकता और उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

3. हिंदी की प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं के नाम लिखिए जो इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। 15

अथवा

हिंदी भाषा की कुछ प्रमुख वेबसाइट का परिचय दीजिए।

4. कंप्यूटर के माध्यम से संदेश लेखन की प्रक्रिया को समझाइए। 15

अथवा

मशीनी अनुवाद का अर्थ बताते हुए इसके प्रकारों की व्याख्या कीजिए।

***

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4509 **J**

Unique Paper Code : 2054002004

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Vigyapan

Name of the Course : **GE : Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. विज्ञापन का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

विज्ञापन की परिभाषा देते हुए इसके उद्देश्य का विश्लेषण कीजिए। (15)

2. विज्ञापन माध्यम चयन के क्या आधार हैं? विवेचन कीजिए।

अथवा

डिजिटल विज्ञापन के प्रमुख प्रकार बताइए। (15)

3. विज्ञापन की भाषा के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

हिंदी विज्ञापन में सादृश्य विधान, समानांतरता, भाव भंगिमा का सोदाहरण विवेचन कीजिए। (15)

4. प्रिंट माध्यम के वर्गीकृत एवं सजावटी विज्ञापन निर्माण का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

लेआउट के विविध प्रारूप बताइए। (15)

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10×3=30)

(क) विज्ञापन के प्रकार

(ख) सोशल नेटवर्किंग साइट्स

(ग) पंचलाइन

(घ) टेलीविजन विज्ञापन के लिए कॉपी लेखन

जिस प्रकार दीपक अंधकार में प्रकाश फैलाता है, उसी प्रकार आत्मविश्वास जीवन के कठिन अंधेरों में आशा की किरण बनकर उभरता है। इसलिए हर व्यक्ति को चाहिए कि वह आत्मविश्वास बनाए रखे और हर परिस्थिति में सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़े।

(क) आत्मविश्वास का क्या अर्थ है ?

(ख) आत्मविश्वासी व्यक्ति समस्याओं के सामने कैसा व्यवहार करता है ?

(ग) आत्मविश्वास व्यक्ति को क्या विशेष गुण प्रदान करता है ?

(घ) जब व्यक्ति को असफलता मिलती है, तो आत्मविश्वास उसे क्या करने की प्रेरणा देता है ?

(ङ.) इस गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **4075 I**

Unique Paper Code : 2051002004

Name of the Paper : Ability Enhancement Course Hindi (AECs) D

Name of the Course : **Common Programme Group AEC**

Semester : IV

Time : 2 Hours ***Maximum Marks : 60***

Instructions for Candidates :

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **All** questions are compulsory.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. Write about any **one** of the following : 10

निम्नलिखित में से किसी **एक** के बारे में लिखिए :

लाल किला, जंतरमंतर, ताजमहल

2. Write about any **one** of the following Indian dishes. 10

निम्नलिखित में से किसी **एक** भारतीय व्यंजन के बारे में लिखिए।

इडली-सांभर, राजमा-चावल, पोहा

3. Describe any **one**. 10

किसी **एक** का वर्णन कीजिए।

दिवाली, गांधी-जयंती, साड़ी, कुर्ता-धोती

4. Write a dialogue on any **one** topic. 10

किसी **एक** विषय पर संवाद लिखिए।

दो मित्रों में संवाद (किसी भी देशभक्ति फिल्म के आधार पर

माँ-बेटे का संवाद (किसी भी हिन्दी फिल्म के आधार पर

पति-पत्नी का संवाद (किसी भी नाटक के आधार पर)

OR

अथवा

Describe any **one** as you see it.

किसी **एक** का आँखों देखा वर्णन कीजिए।

- स्कूल में हुई किसी विशेष गतिविधि/घटना का वर्णन कीजिए।

- किसी प्राकृतिक दृश्य का वर्णन करें।
- किसी धार्मिक स्थल का वर्णन करें।

5. Write a letter 10

पत्र लिखिए

अपने मित्र को कक्षा में प्रथम स्थान पर आने की बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिये : 10

मनुष्य के जीवन में आत्मविश्वास एक ऐसी पूँजी है जो कठिन समय में उसका सबसे बड़ा सहारा बनती है। आत्मविश्वास का अर्थ है – स्वयं पर विश्वास रखना, अपने कार्यों और निर्णयों को लेकर सकारात्मक सोच बनाए रखना। आत्मविश्वासी व्यक्ति कभी भी समस्याओं से डरता नहीं, बल्कि उनका साहसपूर्वक सामना करता है। जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जब सफलता दूर लगती है और असफलता से मन टूटने लगता है। लेकिन जो व्यक्ति आत्मविश्वास से भरा होता है, वह हार मानने के बजाय बार-बार प्रयास करता है और अंत में सफलता प्राप्त करता है। आत्मविश्वास ही व्यक्ति को नेतृत्व करने की क्षमता देता है, जिससे वह न केवल अपना मार्ग प्रशस्त करता है, बल्कि दूसरों के लिए भी प्रेरणा बनता है।

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **4076**

Unique Paper Code : **2051002005**

Name of the Paper : **Hindi E : Compulsory Hindi Syllabus (CHS)**

Name of the Course : **Common Prog. Group (AEC)-Hindi-E**

Semester : **IV**

Duration : **2 Hours** Maximum Marks : **60**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित शब्दों में आवश्यक स्थान पर अनुस्वार अथवा अनुनासिक का प्रयोग करते हुए इन्हें पुनः लिखिए : 6

पकज, गाव, दवाइया, अक, कुआ, सपत्ति।

2. निम्नलिखित में से छः विदेशी ध्वनियों वाले शब्दों को पहचान कर लिखिए : 6

कॉलेज, कलेजा, ज़मीन, दाँत मॉल, सज़ा, केवल, मैदान, फूल, फ़ालूत, चॉकलेट, खत।

3. निम्नलिखित वाक्यों में उचित स्थानों पर विराम चिह्न लगाकर पुनः लिखिए : 6

(i) मेले में बच्चे बड़े सभी थे

(ii) तुम्हारी परीक्षा कब आरम्भ होगी

(iii) मजदूर क्षमा माँगता रहा मालिक उसे डाँटता रहा

P.T.O.

4. निम्नलिखित वाक्यों को हिंदी की वाक्य संरचना के अनुसार व्यवस्थित कीजिए : 6

(*i*) रहा है वह उड़ा पतंग

(*ii*) लौटा दी मुझे उसने पुस्तक

(*iii*) महान आज लेखक प्रेमचंद कहानी की पढ़ी मैंने

(*iv*) है बड़ा यह घर बहुत

(*v*) परिचय मेरा उससे हुआ धीरे-धीरे

(*vi*) है पढ़ती पुस्तक रीना

5. मॉल में खरीदारी करते हुए, होने वाले संवाद को लिखिए। 6

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** का वर्णन 100 शब्दों में लिखिए : 10

(*i*) किसी बस अड्डे का वर्णन

(*ii*) किसी प्राकृतिक स्थल की यात्रा

7. किसी बाल कहानी के संवाद 100 शब्दों में लिखिए। 10

अथवा

वसंतोत्सव पर 100 शब्दों में निबन्ध लिखिए।

8. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10

एक प्रसिद्ध कवि व नाटककार का कथन है—"समय को मैंने नष्ट किया, अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।" मनुष्य का जीवन अमूल्य है। संसार में समय भी अमूल्य है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। प्रकृति के समस्त कार्य नियत समय पर होते हैं। समय की गति अति तीव्र होती है। जो व्यक्ति

समय के साथ नहीं चल सकता, वह जीवन की दौड़ में पिछड़ जाता है। अतः आवश्यकता है समय के सदुपयोग की। समय वह धन है, जिसका सदुपयोग न करने से वह व्यर्थ चला जाता है। बहुत से व्यक्ति समय गँवाने में ही आनंद का अनुभव करते हैं। यह प्रवृत्ति हानिकारक है। समय को खोकर कोई व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता है। जूलियस सीजर सभा में पाँच मिनट देर से पहुँचा और अपने प्राणों से हाथ धो बैठा। अपनी सेना के कुछ मिनट देर से पहुँचने के कारण नेपोलियन को नेल्सन से पराजित होना पड़ा। समय किसी की बाट नहीं देखता।

(*i*) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(*ii*) समय को अमूल्य क्यों कहा जाता है ?

(*iii*) जीवन में किस प्रकार के व्यक्ति सफल होते हैं ?

(*iv*) 'प्राणों से हाथ धो बैठना' मुहावरे का अर्थ लिखिए।

(*v*) समय को खोकर कोई व्यक्ति सुखी क्यों नहीं रह सकता है ?

2. व्यंग्य विधा का परिचय देते हुए उसकी विकास-यात्रा को रेखांकित कीजिए।

अथवा

हिंदी एकांकी का परिचय देते हुए उसकी की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'मलबे का मालिक' कहानी के आधार पर रक्खा पहलवान का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'नमक का दारोग़ा' कहानी में अभिव्यक्त आदर्शवाद को स्पष्ट कीजिए। (15)

4. 'भाव या मनोविकार' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' के आधार पर विद्यानिवास मिश्र की निबंध-शैली को स्पष्ट कीजिए। (15)

5. 'दीपदान' एकांकी के आधार पर पन्ना के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

सुभद्रा की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए -

(क) संस्मरण

(ख) स्वतंत्रता-पूर्व हिंदी निबंध (6)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4725 **J**

Unique Paper Code : 2055002001

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (A)

Name of the Course : **B.A. Prog. – GE**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (8×3=24)

(क) धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव-दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुँझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल-उछल कर आक्रमण करने शुरू किए। एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पंद्रह और पंद्रह से बीस हज़ार तक नौबत पहुँची, किंतु धर्म अलौकिक वीरता के साथ इस बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भाँति अटल, अविचलित खड़ा था।

अथवा

पूरे साढ़े सात साल के बाद वे लोग लाहौर से अमृतसर आए थे। हॉकी का मैच देखने का तो बहाना ही था, उन्हें ज्यादा चाव उन घरों और बाज़ारों को फिर से देखने का था, जो साढ़े सात साल पहले उनके लिए पराए हो गए थे। हर सड़क पर मुसलमानों की कोई-न-कोई टोली घूमती नज़र आ रही थी। उनकी आँखें इस आग्रह के साथ वहाँ की हर चीज देख रही थीं, जैसे वह शहर साधारण न होकर एक ख़ास आकर्षण-केंद्र हो।

(ख) मन फिर घूम गया कौसल्या की ओर, लाखों-करोड़ों कौसल्याओं की ओर, और लाखों-करोड़ों कौसल्याओं के द्वारा मुखरित एक अनाम-अरूप कौसल्या की ओर। इन सबके राम बन में निर्वासित हैं, पर क्या बात है कि मुकुट अभी भी उनके माथे पर बँधा है और उसी के भीगने की इतनी चिंता है? क्या बात है कि आज भी काशी की रामलीला आरंभ होने के पूर्व एक निश्चित मुहूर्त में मुकुट की ही पूजा सबसे पहले की जाती है? क्या बात है कि तुलसीदास ने 'कानन' को 'सत अवध समाना' कहा और चित्रकूट में पहुँचने पर ही उन्हें 'कलि की कुटिल कुचाल' दीख पड़ी? क्या बात है कि आज भी वनवासी धनुर्धर राम ही लोकमानस के राजा राम बने हुए हैं।

अथवा

मनोविकारों या भावों की अनुभूतियाँ परस्पर तथा सुख या दुःख की मूल अनुभूति से ऐसी ही भिन्न होती हैं, जैसे रासायनिक मिश्रण परस्पर तथा अपने संयोजक द्रव्यों से भिन्न होते हैं। विषय-बोध की विभिन्नता तथा उससे संबंध रखने वाली इच्छाओं की विभिन्नता के अनुसार मनोविकारों की अनेकरूपता का विकास होता है। हानि या दुःख के कारण में हानि या दुःख पहुँचाने की चेतन-वृत्ति का पता पाने पर हमारा काम उस मूल अनुभूति से नहीं चल सकता, जिसे दुःख कहते हैं, बल्कि उसके योग से संघटित क्रोध नामक जटिल भाव की आवश्यकता होती है।

(ग) उन्होंने एक क्षण के लिए भी इस असत्य को स्वीकार नहीं किया कि जातिवाद की संकीर्ण तुला पर ही बर की योग्यता तोली जा सकती है। इतना ही नहीं, जिस कन्यादान की प्रथा का सब मूक-भाव से पालन करते आ रहे थे, उसी के विरुद्ध उन्होंने घोषणा की, "मैं कन्यादान नहीं करूँगी। क्या मनुष्य मनुष्य को दान करने का अधिकारी है? क्या विवाह के उपरांत मेरी बेटी मेरी नहीं रहेगी?" उस समय तक, किसी ने, और विशेषतः किसी स्त्री ने, ऐसी विचित्र और परंपरा-विरुद्ध बात नहीं की थी।

अथवा

लाल! तुम्हारी माला मैं नहीं गूँथ सकी। तुम्हारा जीवन अधूरा होने जा रहा है तो माला कैसे पूरी होती? आज तुम भूखे ही रह गए, मेरे लाल! आज अंतिम दिन मैं तुम्हें अपने हाथों से भोजन भी न करा सकी! तुम क्या जानो कि कल तुम और कुँवर साथ-साथ कैसे भोजन करोगे! कहते थे, कल तुम परोसकर खिलाना। अब मैं कैसे खिलाऊँगी, चंदन!

2. कहानी की परिभाषा देते हुए उसके विकास को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

रेखाचित्र के विकास पर प्रकाश डालिएं।

3. 'आकाशदीप' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'परिन्दे' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

4. 'जीभ को क़ाबू में रखने से सारी इंद्रियाँ क़ाबू में आ जाती हैं', 'ज़बान' निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'सच्ची वीरता' निबंध के आधार पर सच्चे वीर पुरुष की विशेषताएँ लिखिए।

5. 'मालव प्रेम' की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'गुंगिया' में वर्णित समस्या का विवेचन कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए: (6)

(i) कहानी और निबंध में अंतर

(ii) व्यंग्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4728 **J**

Unique Paper Code : 2055002002

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (B)

Name of the Course : **B.A. Prog. Hindi – B GE**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (8×3=24)

(क) सामने जल-राशि का रजत शृंगार था। वरुण बालिकाओं के लिए लहरों से हीरे और नीलम की क्रीड़ा शैल-मालाएँ बन रही थीं और वे मायाविनी छलनाएँ अपनी हँसी का कलनाद छोड़कर छिप जाती थीं। दूर-दूर से धीवरों का वंशी - झनकार उनके संगीत-सा मुखरित होता था। चंपा ने देखा कि तरल संकुल जल-राशि में उसके कंडील का प्रतिबिंब अस्त-व्यस्त था! वह अपनी पूर्णता के लिए सैकड़ों चक्कर काटता था। वह अनमनी होकर उठ खड़ी हुई। किसी को पास न देखकर पुकारा - जया!

अथवा

आज चैपल में मैंने जो महसूस किया, वह कितना रहस्यमय, कितना विचित्र था, ह्यूबर्ट ने सोचा। मुझे लगा, पियानो का हर नोट चिरंतन ख़ामोशी की अँधेरी खोह में निकलकर बाहर फैली नीली धुँध को काटता, तराशता हुआ एक भूला-सा अर्थ खींच लाता है। गिरता हुआ हर 'पोज' एक छोटी-सी मौत है, मानो घने छायादार वृक्षों की काँपती छायाओं में कोई पगडंडी गुम हो गई हो, एक छोटी-सी मौत जो आने वाले सुरों को अपनी बची-खुची गूँजों की साँसें समर्पित कर जाती है... जो मर जाती है, किंतु मिट नहीं पाती, मिटती नहीं इसलिए मरकर भी जीवित है, दूसरे सुरों में लय हो जाती है....

(ख) जीभ को न दबाना अनेक बुराई और क्लेश का कारण है। महाभारत ऐसा सर्वनाशी संग्राम इसी जीभ के न दबाने की बदौलत किया गया। द्रौपदी ने यदि दुर्योधन को 'अंधे के अंधे होते हैं' इस मर्मवेधी वाक्य को कह मर्म ताड़न न किया होता और दुर्योधन को पांडवों से खार न पैदा हुई होती तो परिणाम में 18 अक्षौहिणी सेना काहे को कट मरती, जिसका धक्का जो हिंदुस्तान को लगा बल्कि जैसा कारी घाव इसके शरीर में हो गया, उसकी मरहमपट्टी आज तक न हो सकी। इन्हीं सब कारणों से सिद्ध हुआ, मनुष्य अपनी जीभ पर जहाँ तक चौकसी कर सके और उसको दबा सके, दबावै । इस पर चौकसी रखने से अनेक भलाइयाँ हैं और स्वच्छंद कर देने से सब तरह की बुराइयों की संभावना है।

अथवा

अपने आपको हर घड़ी और हर पल महान से भी महान बनाने का नाम वीरता है। वीरता के कारनामे तो एक गौण बात है। असल वीर तो इन कारनामों को अपनी दिनचर्या में लिखते भी नहीं। पेड़ तो जमीन से रस ग्रहण करने में लगा रहता है। उसे यह ख़याल ही नहीं होता कि मुझमें कितने फल वा फूल लगेंगे और कब लगेंगे। उसका काम तो अपने आपको सत्य में रखना है सत्य को अपने अंदर कूट कूटकर भरना है और अंदर ही अंदर बना है। उसे इस चिंता से क्या मतलब कि कौन मेरे फल खाएगा था मैंने कितने फल लोगों को दिए।

(ग) तुम्हारा भाई जयदेव उसे अपने कुल का अभिमान है। मैं एक साधारण किसान का पुत्र हूँ और तुम भारत की सुप्रसिद्ध मालव जाति की कन्या हो। आकाश की तारिका की ओर पृथ्वी पर पैर रखकर चलने वाला प्राणी कैसे हाथ बढ़ा सकता है?

अथवा

जीवन में मैंने जितने विचित्र व्यक्ति और जैसे रहस्य इतिवृत्त देखे सुने हैं, उनके सामने कल्पना के सभी निर्माण फीके पड़ सकते हैं; पर गुँगिया मेरे हृदय में जो करुण विस्मय जगा सकी थी, वह फिर नहीं जगा। मेरा पत्र-लेखन क्रम टूटा नहीं। तब मैं अपने विनोद के लिए दूसरों की जीवन-कथा लिखती थी और अब दूसरों के सुख-दुःख पढ़ती हूँ, गुँगिया जैसे व्यक्तित्व को खोजने के लिए।

कभी-कभी सोचती हूँ, वह वात्सल्य की अवाक्; पर चिर-स्पंदनशील प्रतिमा क्या मेरी स्मृति में अकेली रहेगी।

हाथ में ठेले की क्या बात, आप घिस्से भी नहीं पाएंगे, रंग वही सांवला है, लेकिन उसमें गड्ढे के सड़े पानी की मुर्दनी नहीं है, कालिंदी का कलकल छलछल है, जिसके कूल पर कितने ही गोपाल वंशी टेरते, कितने ही नंदलाल रासलीला का स्वप्न देखते ! बुधिया जिस सरेह में निकल जाती जिंदगी तरंगे लेती।

2. कहानी किसे कहते हैं। कहानी विधा के विभिन्न तत्त्वों को लिखिए । (15)

अथवा

व्यंग्य को परिभाषित करते हुए, व्यंग्य विधा का सामान्य परिचय दीजिए ।

3. 'बड़े भाई साहब' कहानी का सार लिखिए। (15)

अथवा

सुदर्शन की कहानी 'हार की जीत' की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए ।

4. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध में क्या कहा गया है? स्पष्ट कीजिए । (15)

अथवा

'मेले का ऊँट' में अभिव्यक्त व्यंग्य चेतना को समझाइये।

5. 'भोलाराम का जीव' के उद्देश्य को अपने शब्दों में लिखिए । (15)

अथवा

रामवृक्ष बेनीपुरी की बुधिया स्त्री अस्मिता की रचना है। स्पष्ट कीजिए

6. निबंध अथवा एकांकी में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए । (6)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4729 **J**

Unique Paper Code : 2055002003

Name of the Paper : Hindi Gadya Udbhav aur Vikas (C) (GE)

Name of the Course : **B A Prog.**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । (8,8,8)

(क) दैव न करें, आज मैं बीमार हो आऊँ, तो तुम्हारे हाथ-पाँव फूल जाएगें। दादा को तार देने के सिवा तुम्हे और कुछ न सूझेंगा, लेकिन तुम्हारी जगह पर दादा हो, तो किसी को तार न दें, न घबराएँ, न बदहवास हों। पहले खुद मरज पहचानकर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए, तो किसी डॉक्टर को बुलायेगें। बीमारी

तो खैर बडी चीज है। हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने भर का महीने -भर कैसे चले। जो कुछ दादा भेजते हैं, उसे हम बीस-बाईस तक खर्च कर डालते हैं और पैसे-पैसे को मोहताज हो जाते है। नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी और नाई से मुंह चुराने लगते हैं, लेकिन जितना आज हम और तुम खर्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बडा भाग इज्जत और नेकनामी के साथ निभाया है और एक कुटुम्ब का पालन किया है, जिसमें सब मिलाकर नौ आदमी थे।

अथवा

आकाश पर तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था । खड्‌गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक किसी वियोगी की आँखों की तरह चौपट खुला था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। हानि ने उन्हें हानि की तरफ से बेपरवाह कर दिया था। खड्‌गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

(ख) मानव शरीर का अध्ययन करनेवाले प्राणि-विज्ञानियों का निश्चित मत है कि मानव - चित्त की भाँति मानव- शरीर में भी बहुत-सी अभ्यासजन्य सहज वृतियों रह गई हैं। दीर्घकाल तक उनकी आवश्यकता रही है। अतएव शरीर ने अपने भीतर एक ऐसा गुण पैदा कर लिया है कि वे वृत्तियाँ अनायास ही, और शरीर के अनजान में भी, अपने-आप काम करती है। नाखून का बढ़ना उसमें से एक है, केश का बढ़ना दूसरा है, दाँत का दुबारा उठना तीसरा है, पलकों का गिरना चौथा है।

अथवा

मेरा तुम्हारा जीवन एक ही रस्सी से बंधा हुआ था । मैं ही हल चलाकर तुम्हारे खेतों में अन्न उपजाता था और मैं ही चारा आदि पीठ पर लादकर तुम्हारे घर पहुँचता था । यहाँ कलकत्ते में जल की कलें हैं, गंगाजी हैं, जल पिलाने को लाखों कहार हैं, पर तुम्हारी जन्मभूमि में मेरी पीठ पर लादकर कोसों से जल लाया जाता था और मैं तुम्हारी प्यास बुझाता था । मेरी इस घायल पीठ को घृणा से मत देखो । इस पर तुम्हारे बड़े (पूज्य) अन्न, रस्सियाँ यहाँ तक कि उपले लादकर दूर-दूर ले जाते थे । जाते समय मेरे साथ पैदल जाते थे और लौटते समय मेरी पीठ पर चढ़े हुए हिचकोले खाते, स्वर्गीय सुख लूटते आते थे ।

(ग) क्या बताऊँ ? गरीबी की बीमारी थी । पाँच साल हो गए, पेंशन पर बैठे। पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पन्द्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब आता ही नहीं था और आता तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले में विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में सब गहने बेच कर हम लोग खा गए। फिर बरतन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। चिंता में घुलते - घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दी ।

अथवा,

अब बुधिया पैबंद वाली बुधिया नहीं है। अब उसकी चुनर का रंग कभी मलिन नहीं होता । उसकी चोली सिवाई पटी का दर्जी सिता है, मानो वह रोज घास को आती जाती है, लेकिन उसके

एकांकी के तत्व बताते हुए उनका विश्लेषण कीजिए।

3. 'अनमोल रतन' कहानी की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'मलबे का मालिक' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

4. 'उत्साह' निबन्ध की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'आचरण की सभ्यता' निबन्ध में लेखक के विचारों से आप सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

5. 'दीपदान' एकांकी के किसी एक पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए। (15)

अथवा

'भोलाराम का जीव' के माध्यम से लेखक ने किन समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(क) प्रेमचंद युगीन कहानी

(ख) व्यंग्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4730 **J**

Unique Paper Code : 2055092001

Name of the Paper : Hindi Gadya Vikas Ke Vividh Charan (A)

Name of the Course : **GE Hindi B.Com Programme**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) दिलफिगार ने पूरब से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक कितने ही जंगलों और वीरानों की खाक छानी, कभी बर्फिस्तानी चोटियों पर सोया, कभी डरावनी घाटियों में भटकता फ़िरा मगर जिस चीज की धुन थी वह न मिली, यहां तक कि उसका शरीर हड्डियों का एक ढांचा रह गया।

P.T.O.

अथवा

"हां, बेटे, मैं तुम लोगों का गनी मियां हूं। चिराग और उसके बीबी-बच्चे तो अब मुझे मिल नहीं सकते, मगर मैंने सोचा कि एक बार मकान की ही सूरत देख लूं।" बुढ्ढे ने टोपी उतारकर सिर पर हाथ फेरा, और अपने आंसुओं को बहने से रोक लिया।

(ख) उत्साह की गिनती अच्छे गुणों में होती है। किसी भाव के अच्छे या बुरे होने का निश्चय अधिकतर उसकी प्रवृत्ति के शुभ या अशुभ परिणाम के विचार से होता है। वही उत्साह जो कर्त्तव्य कर्मों के प्रति इतना सुन्दर दिखाई पड़ता है, अकर्त्तव्य कर्मों की ओर होने पर वैसा श्लाध्य नहीं होता। आत्म-रक्षा, पर-रक्षा, देश-रक्षा आदि के निमित्त साहस की जो उमंग देखी जाती है उसके सौन्दर्य को पर-पीड़न, डकैती, आदि कर्मों का साहस कभी नहीं पहुंच सकता। यह बात होते हुए भी विशुद्ध उत्साह या साहस की प्रशंसा संसार में थोड़ी बहुत होती है। अत्याचारियों या डाकुओं के शौर्य और साहस की कथाएं भी लोग तारीफ करते हुए सुनते हैं।

अथवा

न मैं किसी गिरजे में जाता हूं न किसी मन्दिर मे, न मैं नमाज पढ़ता हूं और न रोजा ही रखता हूं, न संध्या ही करता हूं और न कोई देव-पूजा ही करता हूं, न किसी आचार्य के नाम का

मुझे पता है और न किसी के आगे मैंने सिर ही झुकाया? है। तो इससे प्रयोजन ही क्या और इससे हानि भी क्या? मैं तो अपनी खेती करता हूं, अपने हल और बैलों को प्रातः काल उठकर प्रणाम करता हूं, मेरा जीवन जंगल के पेड़ों और पत्तियों की संगति में गुजरता है, आकाश के बादलों को देखते मेरा दिन निकल जाता है। मैं किसी को धोखा नहीं देता; हां यदि कोई मुझे धोखा दे तो उससे मेरी कोई हानि नहीं।

(ग) ओह! मां, तुम तो बातें करने में बड़ी अच्छी हो। जब मैं बड़ा होकर बहुत-सी जागीरें जीतूंगा, मां! तो मैं तुम्हारे लिए एक मन्दिर बनवाऊंगा। देवी के स्थान पर तुमको बिठलाऊंगा और तुम्हारी पूजा करूंगा। तुम अपनी पूजा करने दोगी?

अथवा

साहब ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा- "मगर वजन चाहिए। आप समझे नहीं। जैसे आपकी यह सुन्दर वीणा है, इसका भी वजन भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना बजाना सीखती है। यह मैं उसे दे दूंगा। साधु संतों की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते हैं।

2. निबन्ध विधा का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

2. भारतेंदुयुगीन हिंदी निबंध का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

हिंदी कहानी के विकास का सामान्य परिचय दीजिए ।

3. 'दो बैलों की कथा' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए ।(15)

अथवा

'बहादुर' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए ।

4. 'घर जोड़ने की माया' निबंध का सार लिखिए। (15)

अथवा

सच्ची वीरता निबंध की समीक्षा कीजिए।

5. रामा का चरित्र की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर मंगर की समीक्षा कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए । (6)

(क) व्यंग्य

(ख) संस्मरण

(600)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4732 **J**

Unique Paper Code : 2055092003

Name of the Paper : HINDI GADYA KE VIVIDH CHARAN (C)

Name of the Course : **B.COM. (PROG.) GE**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित में से **किन्ही तीन** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (8+8+8=24)

(क) गधे का छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है, और वह है बैल। जिस अर्थ में हम गधा का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में बछिया के ताऊ का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे; मगर हमारा विचार ऐसा नहीं हैं। बैल कभी-कभी मारता

भी है, कभी-कभी अडियल बैल भी देखने में आता है। और भी कई रीतियों से अपना असन्तोष प्रकट कर देता है(अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।

अथवा

मैंने आँगन में नजर दौड़ाई। एक ओर स्टूल पर उसका बिस्तर रखा था। अलगनी पर उसके कुछ कपड़े टँगे थे। स्टूल के नीचे वह भूरा जूता था, जो मेरे साले साहब के लड़के का था। मैं उठकर अलगनी के पास गया और उसके नेंकर कर की जेब में हाथ डालकर उसके सामान निकालने लगा वही गोलियाँ, पुराने ताश की गड्डी, खूबसूरत पत्थर, ब्लेड, कागज की नावें... ।

(ख) हर दफा दिखावे और नाम की खातिर छाती ठोंककर आगे बढ़ना और फिर पीछे हटना परले दर्जे की बुजदिली है। वीर तो यह समझता है कि मनुष्य का जीवन एक जरा-सी चीज है। वह सिर्फ एक बार के लिए काफी है। मानो इस बंदूक में एक ही गोली है। हाँ कायर पुरुष इसको बड़ा ही कीमती और कभी न टूटने वाला हथियार समझते हैं। हर घड़ी आगे बढ़कर और यह दिखाकर कि हम बड़े हैं, वे फिर पीछे इस गरज से हट जाते हैं कि उनका अनमोल जीवन किसी और भी उत्तम काम के लिए बच जाय ।

अथवा

घर फूंकने का अर्थ है धन और मान का मोह त्याग देना, भूत और भविष्य की चिन्ता छोड़ देना और सत्य के सामने सीधे खड़े होने में जो कुछ भी बाधा हो उसे निर्ममता पूर्वक ध्वंस कर देना। पर सत्यों का सत्य यह है कि लोग कबीरदास के साथ चलने

की प्रतिज्ञा करने के बाद भी घर नहीं फूँक सके। मठ बने, मंदिर बने, प्रचार के साधन आविष्कार किये गये और उनकी महिमा बताने के लिए अनेक पोथियाँ रची गई। इस बात का बराबर प्रयत्न होता रहा कि अपने इर्द-गिर्द के समाज में यह कोई यह न कह सके कि इन का अमूक काम सामाजिक दृष्टि से अनुचित है।

(ग) उस समय परिवार में कन्याओं की अभ्यर्थना नहीं होती थी। आँगन में गानेवालियाँ, द्वार पर नौबत वाले और परिवार के बूढ़े से लेकर बालक तक सब पुत्र की प्रतीक्षा में बैठे रहते थे। जैसे ही दबे स्वर से लक्ष्मी के आगमन का समाचार दिया गया, वैसे ही घर के एक कोने से दूसरे तक दरिद्र निराशा व्याप्त हो गई। बड़ी बढ़ियाँ संकेत से मूक गानेवालियों को जाने के लिए कह देतीं और बड़े-बूढ़े इशारे से नीरव वाजे वालों को विदा देते यदि ऐसे अतिथि का भार उठाना परिवार की शक्ति से बाहर होता, तो उसे बैरंग लौटा देने के उपाय भी सहज थे।

अथवा

उसका खास कारण मंगर का यह हट्टा-कट्टा शरीर और उससे भी अधिक उसका सख्त कमाऊपन, जिसमें ईमानदारी ने चार चाँद लगा दिए थे। जितनी देर में लोगों का हल दस कठ्ठा खेत जोतता, मंगर पंद्रह कठ्ठा जोत लेता और वह भी ऐसा महीन जोतता कि पहली चास में ही सिराऊ मिलना मुश्किल । मंगर को यह बताने की जरूरत नहीं कि कल किस खेत में हल जाएगा। वह शाम को ही सारे खेतों की आर आर घूम आता और जिसकी ताक होती, वहाँ हल लिये सुबह - सुबह पहुँच जाता।

[This question paper contains 2 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक ....

Sr. No. of Question Paper : 4504 **J**

Unique Paper Code : 2054000030

Name of the Paper : Hindi Sahitya ka Itihas (Bhaag-1)

Name of the Course : GE

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. हिंदी साहित्य के इतिहास के स्वरूप पर प्रकाश डालिंए ।

अथवा

हिंदी साहित्य के काल विभाजन के आधार को स्पष्ट कीजिए ।

(15)

2. आदिकालीन साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

अथवा

आदिकालीन परिस्थितियों को स्पष्ट कीजिए। (15)

3. संत साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए।

अथवा

भक्ति आंदोलन के विकास पर प्रकाश डालिए। (15)

4. रीतिकाल की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रीतिमुक्त काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए। (15)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए। (10×3=30)

(क) रासो साहित्य

(ख) कृष्ण भक्ति काव्य

(ग) सूफी भक्ति काव्य

(घ) रीतिकालीन वीर काव्य

(ङ) आदिकाल के नामकरण की समस्या

(100)

[This question paper contains 2 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक ....

Sr. No. of Question Paper : 4505 **J**

Unique Paper Code : 2054000031

Name of the Paper : Hindi Sahitya ka Itihas (Bhaag-2)

Name of the Course : GE

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतेंदु युगीन साहित्य में राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

नवजागरण और स्वतंत्रता आंदोलन के बीच संबंध को स्पष्ट कीजिए।

2. प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएँ बताएँ। (15)

अथवा

छायावाद की परिभाषाएँ देते हुए उसकी विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

3. नई कविता की संवेदना और शिल्प पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

साठोत्तरी हिंदी कविता में आधुनिक समाज की सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों की विवेचना कीजिए।

4. हिंदी कहानी की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यासों की विशेषताएँ बताएँ।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए। (10+10+10=30)

(क) द्विवेदी युग में खड़ी बोली आंदोलन

(ख) प्रगतिवादी काव्य

(ग) समकालीन हिंदी कविता में यथार्थ

(घ) हिंदी निबंध

(ङ) हिंदी संस्मरण

(100)

6. निम्नलिखित में किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिये : (9×2=18)

(क) प्रेमचंदयुगीन उपन्यास

(ख) धर्मवीर भारतीय का योगदान

(ग) कर्मभूमि उपन्यास के आधार पर सुखदा का चरित्र-चित्रण

(घ) चित्रा-मुद्गल

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 6130 J

Unique Paper Code : 2052102403

Name of the Paper : हिंदी उपन्यास

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi / (DSC)

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिन्दी उपन्यास के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए इसकी विकास यात्रा पर प्रकाश डालिये। (15)

अथवा

हिंदी उपन्यास की प्रमुख प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिये।

2. श्री निवास दास अथवा प्रेमचंद का साहित्यिक योगदान लिखिये। (15)

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास की तात्विक समीक्षा कीजिये। (15)

अथवा

"कर्मभूमि उपन्यास स्वतंत्रता आंदोलन का दस्तावेज है", इस कथन के आलोक में वर्णित समस्याओं पर प्रकाश डालिये।

4. 'रागदरबारी' उपन्यास में चित्रित सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट कीजिये। (15)

अथवा

'रागदरबारी' उपन्यास के शीर्षक की प्रतीकात्मकता स्पष्ट करते हुए वैद्य जी के चरित्र पर प्रकाश डालिये।

5. निम्नलिखित में किन्हीं **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (12)

(क) इस इलाके के ज़मींदार एक महन्तजी थे। कारकून और मुख्तार उन्हीं के चेले-चापड़ थे। इसलिए लगान बराबर वसूल होता जाता था। ठाकुरद्वारे में कोई-न-कोई उत्सव होता ही रहता था। कभी ठाकुरजी का जन्म है, कभी ब्याह है, कभी यज्ञोपवीत है, कभी झूला है, कभी जल-विहार है। असामियों को इन अवसरों पर बेगार देनी पड़ती थी; भेंट - न्योछावर पूजा-चढ़ावा आदि नामों

से दस्तूरी चुकानी पड़ती थी; लेकिन धर्म के मुआमले में कौन मुँह खोलता? धर्म-संकट सबसे बड़ा संकट है। फिर इलाक़े के काश्तकार सभी नीच जातियों के लोग थे। गाँव पीछे दो-चार घर ब्राह्मण-क्षत्रियों के थे भी, तो उनकी सहानुभूति असामियों की ओर न होकर महन्तजी की ओर थी। किसी-न-किसी रूप में वे सभी महन्तजी के सेवक थे। असामियों को उन्हें प्रसन्न रखना पड़ता था। बेचारे एक तो गरीब, ऋण के बोझ से दबे हुए, दूसरे मूर्ख, न क़ायदा जानें न क़ानून; महन्तजी जितना चाहें इजाफ़ा करें, जब चाहें बेदखल करें, किसी में बोलने का साहस न था।

अथवा

(ख) शहर के एक क़ोने में ऊँची चहारदीवारी से घिरा हुआ एक लम्बा-चौड़ा बँगला था, जिसकी बनावट से ही लगता था कि वह किसी ताल्लुक़ेदार को किराये पर रहने के लिए उठा दिया था।

बँगले के एक कोनेवाले कमरे में जिला विद्यालय-निरीक्षक का दफ्तर था, उसे छोड़कर बाकी बँगले में उनका निवास स्थान था। उनके रहने के पूरे हिस्से का किराया सरकार-उसे दफ्तर समझकर देती थी। दफ्तर का पूरा किराया जिला विद्यालय निरीक्षक अपने मकान के नाम पर देते थे। इस तरह के मैत्रीपूर्ण समझौते को अंग्रेजी में 'ऑफिस-कम-रेजीडेन्स' कहा जाता है। हिन्दी में उसे 'ऑफिस-कम-रेजीडेन्स ज्यादा' कहते हैं।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4086 **J**

Unique Paper Code : 2051002002

Name of the Paper : Jansanchar Aur Rachnatmak Lekhan (Hindi B)

Name of the Course : **AEC : Common Prog. Group**

Semester : IV

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. रचनात्मक लेखन के प्रमुख तत्वों का उल्लेख करते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

जनसंचार माध्यमों के लिए रचनात्मक लेखन के विविध रूपों का परिचय दीजिए।

P.T.O.

2. जनसंचार के विविध माध्यमों में रचनात्मकता की भूमिका को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा के प्रसार को गति दी है' – इस कथन का युक्तियुक्त उत्तर दीजिए।

3. किसी ऐतिहासिक स्थान की यात्रा का वृतांत लिखिए। (15)

अथवा

किसी साहित्यकार से लिया जाने वाला साक्षात्कार तैयार कीजिए।

4. हिंदी फिल्मों में गीत लेखन की भूमिका और महत्त्व को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

प्रिन्ट माध्यम के लिए एक सजावटी विज्ञापन बनाइए।

2. 'हिमाद्रि तुंग शृंग से' कविता का प्रतिपादय लिखिए। (15)

अथवा

'बीती विभावरी जाग री' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है, स्पष्ट कीजिए।

3. 'गुंडा' कहानी के गुंडा का चरित्र-चित्रण कीजिए। (15)

अथवा

'पुरस्कार' कहानी में प्रेम और कर्त्तव्य का आदर्श रूप उपस्थित है, स्पष्ट कीजिए।

4. 'अजातशत्रु' नाटक के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहता है, स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

मल्लिका का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. निबंधकार जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय दीजिए। (15)

अथवा

'यथार्थवाद और छायावाद' निबंध के आधार पर यथार्थवाद की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 7497 **J**

Unique Paper Code : 2052202403

Name of the Paper : किसी एक साहित्यकार का अध्ययन (जयशंकर प्रसाद)

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV – DSC

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) अधरों में राग अमंद पिए
अलकों में मलयज बंद किए
तू अब तक सोई है आली
आंखों में भरे विहाग री!

अथवा

इन प्यासी तलवारों से,

इन पैनी धारों से,

निर्दयता की मारों से,

उन हिंसक हुंकारों से,

नत मस्तक आज हुआ कलिंग।

(ख) शैल के एक ऊँचे शिखर पर चम्पा के नाविकों को सावधान करने के लिए सुदृढ़ दीप-स्तंभ बनवाया गया था। आज उसी का महोत्सव है। बुद्धगुप्त स्तंभ के द्वार पर खड़ा था। शिविका से सहायता देकर चम्पा को उसने उतारा। दोनों ने भीतर पदार्पण किया था कि बांसुरी और ढोल बजने लगे। पंक्तियों में कुसुम-भूषण से सजी वन-बालाएं फूल उछालती हुई नाचने लगी।

अथवा

"गला सूख रहा है, साथी छूट गये हैं, अश्व गिर पड़ा है-इतना थका हुं-इतना!" कहते-कहते वह व्यक्ति धम-से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा, यह विपत्ति कहां से आई! उसने जल दियां, मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी- "ये सब विधर्मी दया के पात्र नहीं-मेरे पिता का वध करने वाले आततायी!" घृणा से उसका मन विरक्ह्त हो गया।

(ग) जीवन की क्षणभंगुरता देखकर भी मानव कितनी गहरी नींव देना चाहता है। आकाश के नीले पत्र पर उज्ज्वल अक्षरों से लिखे अकृष्ट के लेख जब धीरे-धीरे लुप्त होने लगते हैं, तभी तो मनुष्य प्रभात समझने लगता है, और जीवन-संग्राम में प्रवृत्त होकर अनेक अकाण्ड-ताण्डव करता है। फिर भी प्रकृति उसे अंधकार की गुफा में ले जाकर उसका शांतिमय, रहस्यपूर्ण भाग्य का चिठ्ठा समझाने का प्रयत्न करती है; किन्तु वह कब मानता है? मनुष्य व्यर्थ महत्व की आकांक्षा में मरता.हैय अपनी नीची, किन्तु सुदृढ़ परिस्थिति में उसे संतोष नहीं होता, वह नीचे से उंचे चढ़ना ही चाहता है, चाहे गिरे तो भी क्या?

अथवा

यथार्थवाद की विशेषताओं में प्रधान है लघुता की ओर साहित्यिक दृष्टिपात। उसमें स्वभावत: दुख की प्रधानता और वेदना की अनुभूति आवश्यक है। लघुता से मेरा तात्पर्य है साहित्य के माने हुए सिद्धांत के अनुसार महत्ता के काल्पनिक चित्रण से अतिरिक्त व्यक्तिगत जीवन के दुख और अभावों का वास्तविक उल्लेख। भारत के तरुण आर्य संघ में सांस्कृतिक नवीनता का आंदोलन करने वाला दल उपस्थित हो गया था। वह पौराणिक युग के पुरुषों के चरित्र को अपनी प्राचीन महत्ता का प्रदर्शन मात्र समझने लगा। दैवी शक्ति से तथा महत्त्व से हटकर अपनी क्षुद्रता तथा मानवता में विश्वास होना, संकीर्ण संस्कारों के प्रति द्वेष होना स्वाभाविक था।

[This question paper contains 2 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक ....

Sr. No. of Question Paper : 4503 **J**

Unique Paper Code : 2054000029

Name of the Paper : **साहित्यलोचन**

Name of the Course : GE: Hindi

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. साहित्य की परिभाषा देते हुए प्रबंध काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

अथवा

उपन्यास की परिभाषा देते हुए उपन्यास के प्रमुख तत्वों का विवेचन कीजिए। (15)

2. शब्दशक्ति की अवधारणा बताते हुए लक्षणा शब्द-शक्ति के भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

अथवा

काव्य-दोष की संकल्पना स्पष्ट करते हुए प्रमुख काव्य-दोषों पर प्रकाश डालिए । (15)

3. रस के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए किन्हीं दो रसों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

अलंकार का परिचय देते हुए चमक और श्लेष को सोदाहरण स्पस्ट कीजिए । (15)

4. उत्तर आधुनिकता की अवधारणा स्पष्ट कीजिये ।

अथवा

यथार्थवाद किसे कहते हैं? आदर्शवाद एवं यथार्थवाद में अंतर स्पष्ट कीजिए । (15)

5. किन्हीं **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :- (10×3=30)

(क) मुक्तक और प्रगीत

(ख) मिथक

(ग) काव्य-गुण

(घ) छप्पय, चौपाई

(ङ) आधुनिकता

(100)

(ग) क्रॉस मीडिया ओनरशिप

(घ) सूचना समाज

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4510 **J**

Unique Paper Code : 2054002006

Name of the Paper : संचार क्रांति और ग्लोबल मीडिया

Name of the Course : **GE** हिंदी पत्रकारिता

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सूचना के प्रवाह में डिजिटल क्रांति की भूमिका का वर्णन कीजिए।

अथवा

एजेंडा सेटिंग से आप क्या समझते हैं? मीडिया में एजेंडा सेटिंग के स्वरूप का परिचय दीजिए । (20)

2. प्रमुख ग्लोबल समाचार समितियों का विस्तृत विवरण दीजिए ।

अथवा

प्रमुख ग्लोबल डिजिटल नेटवर्क का विवरण देते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिए । (20)

3. ग्लोबल मीडिया के अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर प्रभाव का आकलन कीजिए ।

अथवा

आधुनिक समाज में नई सूचना व्यवस्था के महत्व को रेखांकित कीजिए । (20)

4. भारत में डिजिटल मीडिया स्वामित्व के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

किसी एक अंतरराष्ट्रीय समाचार पत्र की सामग्री पर रिपोर्ट तैयार कीजिए । (20)

5. किन्ही दो पर टिप्पणी लिखिए: (5,5)

(क) ग्लोबल टेलीविजन नेटवर्क

(ख) नई सूचना व्यवस्था में यूनेस्को की भूमिका

[This question paper contains 3 printed pages]

Your Roll No.	:	
Sl. No. of Q. Paper	: **4087**	**I**
Unique Paper Code	: 2051002001	
Name of the Paper	: Vyavharik Hindi (Hindi- A)	
Name of the Course	: **AEC 2**	
Semester	: IV	
Programme	: Common Prog. Group	

Time : 2 Hours ***Maximum Marks : 60***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(ii) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

(iii) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. 'समस्त क्षेत्रों में प्रयोग हेतु व्यावहारिक हिन्दी सक्षम है' – वर्णन कीजिए। 15

P.T.O.

अथवा

बैंकों में हिन्दी का प्रयोग सामान्य ग्राहक की सुविधा के लिए आवश्यक है – कथन की पुष्टि कीजिए। 15

2. 'हिन्दी समस्त भारत में बोली और समझी जाती है – कथन के आधार पर संपर्क भाषा हिन्दी का वर्णन कीजिए। 15

अथवा

सामान्य हिन्दी से तुलना करते हुए कलकतिया हिन्दी की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

3. मॉल प्रयुक्त होने वाली हिन्दी का सोदाहरण वर्णन कीजिए। 15

अथवा

बैंकों में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली की उपयोगिता को स्पष्ट कीजिए। 15

4. कार्यालय में ठीक समय पर उपस्थिती हेतु कर्मचारियों को परिपत्र लिखिए और उसमें प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

किसी एक महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थल से जुड़े यात्रा – संस्मरण को लिखिए। 15

***

(ग) मुझे प्राय: गालियों के सम्बोधन से पुकारा जाता। स्कूल से शाम को घर आते ही पशुओं को चारा-पानी देने का काम मुझे सौंप दिया जाता। रात में सबसे बड़ा संकट यह था की चिराग न होने से मैं कुछ भी पढ़ नहीं पाता था। पहले एक ढिबरी जलाकर पढ़ा करता था, किन्तु दसवीं कक्षा में उसे जलाने के लिए मिट्टी का तेल मिलना बंद हो गया। घर में एक लालटेन जरूर थी, किन्तु घर वाले इसका इस्तेमाल बहुउद्देशीय कार्यों के लिए किया करते थे। अत: रात में न पढ़ पाना मुझे सबसे ज्यादा खलता था।

अथवा

पुरुष ने उसके अधिकार अपने सुख की तुला पर तोले, उसकी विशेषता पर नहीं; अत: समाज की सब व्यवस्थाओं में उसके और पुरुष के अधिकारों में एक विचित्र विषमता मिलती है। जहां तक सामाजिक प्राणी का प्रश्न है, स्त्री पुरुष के समान ही सामाजिक सुविधाओं की अधिकारिणी है, परंतु केवल अधिकार की दुहाई, देकर ही तो वह सबल-निर्बल का चिरंतन संघर्ष और उससे उत्पन्न विषमता नहीं मिटा सकती।

6. किसी **एक** विषय पर टिप्पणी लिखिए – (6)

(क) एलिस एक्का की कहानी में प्रकृति और समाज

(ख) मुर्दहिया और दलित चेतना

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 6102 **J**

Unique Paper Code : 2052103602

Name of the Paper : अस्मितामूलक हिंदी साहित्य (दलित विमर्श, स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श)

Name of the Course : **DSC : Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>**छात्रों के लिए निर्देश**</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. स्त्री विमर्श को परिभाषित करते हुए उदारवादी और मार्क्सवादी अवधारणाओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

आदिवासी विमर्श के विभिन्न पक्षों को स्पष्ट कीजिए।

2. 'यही सच है' कहानी स्त्री के प्रेम और द्वन्द्व की कथा है - स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'पच्चीस चौंका डेढ़ सौ' कहानी समता तथा मुक्ति के लिए संघर्षरत दलित चेतना की कहानी है - समीक्षा कीजिए।

3. 'सोनवा का पिंजरा' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'कहाँ हो तुम माया' कविता में निहित आदिवासी स्त्री की समस्याओं और संघर्षों को उजागर कीजिए।

4. स्त्री की पराधीन स्थिति के लिए महादेवी वर्मा किन कारकों को जिम्मेदार मानती है-विस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

'जंगल से आगे' आत्म संस्मरण में निहित आदिवासी स्त्री के अस्तित्व और संघर्ष की गाथा को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित आंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (8×3)

(क) बालमन की यह खरोंच ग्रन्थि बन गयी थी। जब भी पच्चीस की संख्या पढ़ता या लिखता, उसे पच्चीस चौंका डेढ़ सौ ही याद आता। साथ ही याद आता पिताजी का विश्वास भरा चेहरा और मास्टर शिवनारायाण मिश्रा का गाली-गलौच करता लाल-लाल

गुस्सैल चेहरा। दोनों चेहरे एक साथ स्मृति में दबाए पच्चीस चौका डेढ़ सौ की अंधेरी दुर्गम गलियों में भटकने लगा। जैसे-जैसे बड़ा होने लगा, कई सवाल उसके मन को विचलित करने लगे। जिनके उत्तर उसके पास नहीं थे।

अथवा

ननकु ने सुना तो कहा- "झालो दीदी, जेरकु भाई ठीक कह रहे हैं। दुख भरे गीत बड़े मधुर होते हैं सुनने में। परंतु जेरकु भाई को यह भी जानना चाहिए कि दुख के मधुर गीत गाते रहने से पेट नहीं भरेगा और सचमुच भूखा पेट से कोई दर्द भरा गीत भी कब तक गया सकेगा? जेरकु भाई, भूख मिटनी चाहिए पहले तब गीत, नाच और नगाड़े सुहावने लगेंगे। भूखे पेट नहीं।"

(ख) देशवां आजाद अहै हम तो गुलमवाँ,
हमरे लिए न सरकार।
एस कौनउ जुगुति लगावा भइया 'मितई'
हमरउ करावा उरधार।।

अथवा

पानदान वह छोटा-सा डिब्बा
रख दूँगी उसमें प्यारे-प्यारे तारे
आसमान -
बुरा मत मानना
देखा है मैंने हमेशा उनमें तुम्हीं को।

(iv) विद्यानिवास मिश्र के निबंध का सार

(v) राम–लक्ष्मण परशुराम संवाद

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4969 **J**

Unique Paper Code : 2054000024

Name of the Paper : हिंदी साहित्य और भारतीय मूल्यबोध

Name of the Course : हिंदी **(GE)**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय सांस्कृतिक अवधारणा के आधार पर मूल्य–बोध को रेखांकित कीजिए। (15)

अथवा

एक आदर्श समाज की स्थापना में मूल्यों की उपादेयता पर प्रकाश डालिए।

2. राष्ट्रीयता की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसके विकास में गुप्त कृत 'भारत-भारती' के योगदान पर चर्चा कीजिए। (15)

अथवा

भरत- मिलाप प्रसंग के माध्यम से पारिवारिक संबंधों की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण कीजिए ।

3. प्रेमचंद कृत 'आहुति' कहानी समाज में व्यक्तिगत कर्तव्यों को रेखांकित करती है, स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'डिप्टी कलेक्टरी' कहानी मध्यमवर्गीय मानसिकता के सभी पक्षों को दर्शाती है । इस कहानी के आधार पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।

4. 'आचरण की सभ्यता' निबंध के आधार पर सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों के प्रभाव का विश्लेषण कीजिए । (15)

अथवा

'शिक्षा का उद्देश्य' निबंध के आधार पर वर्तमान समय में शिक्षा की उपयोगिता को रेखांकित कीजिए ।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए । (10x3=30)

(i) राष्ट्रीय-सांस्कृतिक मूल्यबोध

(ii) सरदार पूर्ण सिंह की निबंध शैली

(iii) रश्मिरथी खंडकाव्य का उद्देश्य

P.T.O.

अथवा

'नई कविता का आत्म संघर्ष' में निहित मुक्तिबोध के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

4. 'संदर्भ की खोज' पाठ का प्रतिपादय लिखिए। (15)

अथवा

आलोचना के क्षेत्र में नेमीचंद्र जैन के विशिष्ट योगदान को रेखांकित कीजिए।

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 801 J

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : BA (H) Hindi – CBCS

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गदयांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या लिखिए : (10 + 10 + 10)

(क) लोक में फैली दुख की छाया को हटाने में ब्रह्म की आनंदकला जो शक्तिमय रूप धारण करती है, उसकी भीषणता में भी अद्भुत मनोहरता, कठुता में भी अपूर्व मधुरता, प्रचंडता में भी गहरी

आद्र्ता साथ लगी रहती है। विरुद्धों का यही सामंजस्य कर्म क्षेत्र का सौंदर्य है, जिसकी ओर आकर्षित हुए बिना मनुष्य का हृदय नहीं रह सकता। इस सामंजस्य का और कई रूपों में भी दर्शन होता है। किसी कोट-पतलून-हैट वाले को धारा प्रवाह संस्कृत बोलते अथवा किसी पंडित वेषधारी सज्जन को अंग्रेजी की प्रगल्भ वक्तृता देते सुन व्यक्तित्व का जो एक चमत्कार सा दिखाई पड़ता है, उसकी तह में भी सामंजस्य का यही सौंदर्य समझना चाहिए। भीषणता और सरसता, कोमलता और कठोरता, कटुता और मधुरता, प्रचंडता और मृदुता का सामंजस्य ही लोक धर्म का सौंदर्य है। आदि कवि वाल्मीकि की वाणी इसी सौंदर्य के उद्घाटन-महोत्सव का संगीत है। सौंदर्य का यह उद्घाटन असौंदर्य का आवरण हटाकर होता है। धर्म और मंगल की वह ज्योति अधर्म और अमंगल की घटा को फाड़ती हुई फूटती है। इसमें कवि हमारे सामने असौंदर्य, अमंगल, अत्याचार, क्लेश इत्यादि भी रखता है; रोष, हाहाकार और ध्वंस का दृश्य भी लाता है। पर सारे भाव, सारे रूप और सारे व्यापार भीतर-भीतर आनंदकाल के विकास में योग देते ही पाए जाते हैं।

अथवा

है। आगे चलकर समरूप अनुभवों से मिलते हुए वह मनोमय तत्व जब जीवन मूल्य और जीवन दृष्टि से अपना संगम करता है तब वह और भी सामान्य हो उठता है। प्रश्न यह है कि वे जीवन मूल्य और जीवन-दृष्टियां किसकी हैं? वह सामान्य भूमि किसकी है? यह प्रश्न स्वाभाविक है। यह प्रश्न हमें समाजशास्त्रीय आलोचना की ओर ले जाता है। आगे चलकर जबकि कवि अपने मनोमय तत्व रूप को बाहय अभिव्यक्ति के सांचे में ढालने लगता है या जब एक बाह्य अभिव्यक्ति को अंतर अभिव्यक्ति के साइज की, काट की, रंग की बनाने लगता है, तब उसकी आंखों के सामने जो सौंदर्य प्रतिमान होता है वह सौंदर्य प्रतिमान किस सौंदर्यभिरुचि ने, किस वर्ग की सौंदर्यभिरुचि ने उत्पन्न किया है, यह प्रश्न स्वाभाविक हो उठता है।

2. भारतेंदु युगीन हिन्दी आलोचना के महत्व पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

द्विवेदी युगीन हिन्दी आलोचना की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

3. 'छायावाद और यथार्थवाद' निबंध के आधार पर जयशंकर प्रसाद की आलोचना दृष्टि की समीक्षा कीजिए। (15)

नहीं बदले, प्रेम अब भी प्रेम है, घृणा अभी घृणा, यह साधारणतया स्वीकार किया जा सकता है। पर यह भी ध्यान में रखना होगा कि राग वही रहने पर भी रागात्मक संबंधों की प्रणालियां बदल गई है; और कवि का क्षेत्र रागात्मक संबंधों का क्षेत्र होने के कारण इस परिवर्तन का कवि कर्म पर गहरा असर पड़ा है। निरे तथ्य और सत्य में या कह लीजिए वस्तु-सत्य और व्यक्ति-सत्य में यह भेद है कि सत्य वह तथ्य है जिसके साथ हमारा रागात्मक संबंध है; बिना इस संबंध के वह एक बाहय वास्तविकता है जो तद्धित काव्य में स्थान नहीं पा सकती। लेकिन जैसे-जैसे बाह्य वास्तविकता बदलती है वैसे-वैसे हमारे उससे रगात्मक संबंध जोड़ने की प्रणालियों भी बदलती हैं और अगर नहीं बदलती तो उसे बाहय वास्तविकता से हमारा संबंध टूट जाता है।

अथवा

अभिव्यक्ति प्राप्त होने पर भाव पक्ष का समाजीकरण हो जाता है। सृजन प्रक्रिया के अंतर्गत विशिष्ट को सामान्य बनाने की यह क्रिया तभी से शुरू हो जाती है जब कवि कला के प्रथम चरण में अंतर-नेत्रों से उस तत्व को देखने लगता है कि जो तत्व उन अंतर नेत्रों के सामने तरंगायित और उद्घाटित हो उठता

अब साहित्य ने यह काम अपने जिम्मे में ले लिया है और उसका साधन सौंदर्य-प्रेम है। यह मनुष्य में इसी सौंदर्य-प्रेम को जगाने का यत्न करता है। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसमें सौंदर्य की अनुभूति ना हो। साहित्यकार में यह वृति जितनी ही जागृत और सक्रिय होती है उसकी रचना उतनी ही प्रभावकारी होती है। प्रकृति निरीक्षण और अपनी अनुभूति की तीक्ष्णता की बदौलत उसके सोंदर्य बोध में इतनी तीव्रता आ जाती है कि जो कुछ असुंदर है, अभद्र है, मनुष्यता से रहित है, यह उसके लिए असहय हो जाता है। उस पर वह शब्दों और भावों की सारी शक्ति से वार करता है। अथवा यह कहिए कि वह मानवता दिव्यता और भद्गता का साफा बांधे होता है। जो दलित है, पीड़ित है, वंचित है - चाहे वह व्यक्ति हो या समूह, इसकी हिमायत और वकालत करना उसका फर्ज है। उसकी अदालत समाज है। इस अदालत के सामने वह अपना इस्तगासा पेश करता है और उसकी न्यायवृति तथा सौंदर्यवृति को जागृत करके अपना यत्न सफल समझता है।

(ख) इस मानवतावाद के दो प्रधान लक्षण है - (1) मनुष्य की महिमा और मानवीय मूल्यों में विश्वास और (2) मनुष्य की मर्त्य जीवन को किसी प्रकार के पाप फल भोगने के परिणाम न समझ इसे इसी दुनिया में दुख-शोक से बचाना और इसी दुनिया में सुख समृद्धि से युकत करना। यह दूसरी बात उन सब पुरानी वैरागी मनोभावनाओं का प्रत्याखान करती है जो शरीर को नाना क्रिछाचारों से तापित करके किसी अनंत शाश्वत सुख की ओर मनुष्य को प्रवृत करती है और इस जीवन का संपूर्ण रूप से उपभोग करने की प्रवृत्ति को प्रश्रय देती है। परंतु पहली भावना इस पर अंकुश का काम करती है; क्योंकि वह मनुष्य के द्वारा उद्भावित पशु समान धरातल से उपरले स्तर के मानसिक संयम, बौद्धिक ईमानदारी और मनुष्य रूप को विकसित करने वाले समस्त नैतिक आदर्शों को बहुत अधिक मूल्य देती है। इस प्रकार यह तो माना जाता है कि मनुष्य को यह मर्त्य जीवन ही चरम और परम है, परंतु साथ ही यह भी माना जाता है कि मनुष्य की मनुष्यता असीम संभावनाओं से भरी है। वह सब प्रकार के नैतिक और आध्यात्मिक विकास का साधन है, उसकी महिमा अपार है।

अथवा

तुलसी की मानवीय सहानुभूति का आधार सामाजिक यथार्थ है। तत्कालीन समाज का जैसा भरा पूरा चित्र उनकी रचनाओं में मिलता है वैसा उस समय के और किसी कवि की रचनाओं में नहीं मिलता। जनता की दरिद्रता उनके क्लेशों का वर्णन उन्होंने बड़े ही यथार्थवादी ढंग से किया है, "खेती ना किसान को, भिखारी को न भीख, बलि बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।" बड़ी ही स्पष्टता से उन्होंने समाज में सामंतों के कुशासन का सवाल उठाया है। राजा और प्रजा के संघर्ष में तुलसी प्रजा के साथ हैं रामचरितमानस में वह प्रजा को सताने वाले राजाओं के लिए कहते हैं- "जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी द्य ते नूप अवसि नरक अधिकारी ।।"

(ग) तार सप्तक के कवियों पर यह आक्षेप किया गया कि वे साधारणीकरण सिद्धांत नहीं मानते। यह दोहरा अन्याय है। क्योंकि वे न केवल इस सिद्धांत को मानते हैं बल्कि इसी के प्रयोग की आवश्यकता भी सिद्ध करते हैं। यह मानना होगा की सभ्यता के विकास के साथ-साथ हमारी अनुभूतियों का क्षेत्र भी विकसित होता गया है। यह कहा जा सकता है कि हमारे मूल राग-विराग

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 6043 **J**

Unique Paper Code : 2052103601

Name of the Paper : Hindi Bhasha : Swaroop, Sanrachna Evam Itihas

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : VI – DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारोपीय भाषा परिवार से आप क्या समझते हैं? हिन्दी किस प्रकार भारोपीय भाषा परिवार से संबंधित है? विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

हिंदी भाषा की विकास यात्रा को रेखांकित कीजिए।

P.T.O.

2. भौगोलिक क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से हिंदी भाषा एवं इसकी विविध बोलियों का परिचय दीजिए। (15)

अथवा

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा के स्वरूप पर लेख लिखिए।

3. राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा से आप क्या समझते हैं? राजभाषा के रूप में हिंदी के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

हिंदी भाषा का किस प्रकार ज्ञान-विज्ञान के माध्यम के रूप में प्रयोग हो रहा है? सविस्तार समझाइए।

4. सिनेमा की भाषा में किस प्रकार शीघ्रता से रूप परिवर्तन दिखाई पड़ रहे हैं? तर्कसंगत विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

सोशल मीडिया की भाषा का स्वरूप बताते हुए उसकी विशेषताएं लिखिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10×3=30)

   (i) मध्यकालीन आर्यभाषा

   (ii) राजस्थानी हिंदी की बोलियां

   (iii) संपर्क भाषा

   (iv) प्रिंट मीडिया की भाषा

   (v) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भाषा

2. हिंदी स्त्री लेखन की अवधारणा और विशेषताओं की विवेचना कीजिए। 12

अथवा

हिंदी में स्त्री लेखन की परंपरा पर प्रकाश डालिए।

3. सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना और स्त्री सशक्तिकरण की भावना पर विचार कीजिए। 12

अथवा

निर्मला पुतुल की कविता आदिवासी संस्कृति और प्रकृति के प्रति प्रेम को दर्शाती है, स्पष्ट कीजिए।

4. 'वापसी' कहानी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'ना ज़मी अपनी ना फलक अपना' कहानी एक नौकरीपेशा स्त्री के जीवन की किन विडम्बनाओं पर प्रकाश डालती है ?

5. संस्मरण विधा के अधार पर शिवरानी देवी लिखित 'प्रेमचंद घर में' की समीक्षा कीजिए। 12

अथवा

'जूते चिढ गए हैं' की व्यंग्यात्मकता स्पष्ट कीजिए।

6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 6+6=12

(i) स्वातंत्र्योत्तर स्त्री लेखन

(ii) 'बुद्ध का कमंडल' में प्रकृति चित्रण

(iii) 'जीने की कला' निबंध की विषय-वस्तु

(iv) 'नाम और पता' का काव्य सौष्ठव

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No.	: ....
Sl. No. of Q. Paper	: **7581** **I**
Unique Paper Code	: 2053200006
Name of the Paper	: हिंदी स्त्री लेखन
Name of the Course	: **B.A.(Prog.) DSE**
Semester	: VI

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

Instructions for Candidates :

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) Answer may be written either in **English** or in **Hindi**; but the same medium should be used throughout the paper.

इस प्रश्न-पत्र का उत्तर अंग्रेज़ी या हिंदी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तर एक ही भाषा में होने चाहिए।

(c) **All** questions are compulsory.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10+10+10=30

(क) कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,

नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,
वीर शिवाजी की गाथायें, उसको याद जबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

अथवा

यहाँ कितने हिस्सों में
बाँट दिया है अपने को
फिर भी किसी अंश में
पूरा नहीं जी पाती।
कौन-सा नाम, कौन-सा पता सच है ?
खोज करती –
अमलतास के वृक्षों की कतार के नीचे से
चलती चली जाती हूँ।

(ख) वंशीधर के जाते ही बुढ़िया, जिसे उन्होंने रखवाली के लिए छोड़ा था, किसी बहाने से भाग गई। स्टेशन मास्टर से पूछने पर मालूम हुआ कि कोई तार नहीं आया। अब तो वंशीधर बड़े असमंजस में पड़े। टिकट के लिए बखेड़ा होगा, क्योंकि वह स्त्री बे-टिकट है। लौटकर आए तो किसी को न पाया, "अरे यह सब कहाँ गईं ?" यह कहकर चारों तरफ देखने लगे। कहीं पता नहीं। इस पर वंशीधर घबराए आज कैसी बुरी साइत में घर से निकले कि एक के बाद दूसरी आफत में फँसते चले आ रहे हैं। इतने में अपने सामने उस दुलाईवाली को आते देखा। "तू ही उन स्त्रियों को कहीं ले गई है।"-इतना कहना था कि दुलाई से मुँह खोलकर नवलकिशोर खिलखिला उठे।

अथवा

वह मेरे साथ भविष्य की योजनाएँ बनाता, पर उन्हें अमल में लाये, तब तक के लिए एक मौन समझौता हम लोगों के बीच हो गया। अपना शरीर अपनी भावनाएँ उसने मेरे ज़िम्मे में कर दी और घर,

बच्चा, बूढ़ा बाप और सारी पारिवारिक खिचखिच बीवी के जिम्मे। इस विभाजन में मैं कुछ समय के लिए परम प्रसन्न। यों भी इस उम्र में आदमी को सबसे ज्यादा भरोसा अपने शरीर पर ही होता है। शरीर पर लिया समझो दुनिया – जहान – हथिया लिया। ऊपर से मुझे वह कभी बातों से, तो कभी कविताओं से समझाते रहता कि मन और शरीर की पवित्र भूमि पर ही असली प्रेम पनपता है। घर की चारदीवारी के बीच निरंतर होने वाली खिचखिच में तो वह मरता ही है।

(ग) मनुष्यता के ऊपर की स्थिति को अपना लक्ष्य बनाने से प्रायः मनुष्य देवता की पाषाण-प्रतिमा बनकर रह जाता है और इसके विपरीत मनुष्य से नीचे उतरना पशु की श्रेणी में आ जाना है। एक स्थिति मनुष्य से ऊपर होने पर भी निष्क्रिय है, दूसरी इससे नीची होने के कारण मनुष्यता का कलंक है। अतः दोनों ही स्थितियों में मनुष्यता का कलंक और स्त्री अपनी अज्ञानमय निस्पंद सहिष्णुता के कारण पाषाण – सी उपेक्षणीय दोनों के मनुष्यत्व-युक्त मनुष्य हो जाने से ही जीवन की कला का विकास पा सकेगी जिसका ध्येय मनुष्य की साहनुभूति, सक्रियता, स्नेह आदि गुणों को अधिक-से-अधिक व्यापक बना देना है।

अथवा

इतना ही क्यों, आपने एक पर चलाया और दूसरे को छोड़ा तो भी लोग उँगलियाँ उठाने से बाज नहीं आएँगे कि फलाँ को क्यों बक्शा ! उस पर तो इस वाले से भी पहले चलाना था। वादा करो, अगली बार चलाओगे न उस पर ! छोड़ना मत! तो ये वादा रहा ! दरअसल खानेवालों से ज्यादा समस्या चलाने वालों की है। किसपर चलाएँ किसपर नहीं ? डिमांड ज्यादा है सप्लाई कम। अपनी आधी से ज्यादा जनसंख्या तो पावर्टी लाइन के नीचे पाँच प्यादे चलती है। चलाने के लिए जूते कहाँ से लाएगी। मन मसोसकर रह जाती है कि जाने दो, होते तो भी पहनने के कम, चलने के काम ज्यादा आते।

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **6157**

Unique Paper Code : **2052103603**

Name of the Paper : **Kathetar Gadya Sahitya**

Type of the Paper : **DSC**

Semester : **VI**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कथेतर गद्य साहित्य का परिचय देते हुए उसके स्वरूप पर विचार कीजिए। 15

अथवा

कथेतर गद्य साहित्य एवं कथा साहित्य के अंतःसंबंध को स्पष्ट कीजिए।

2. कथेतर साहित्य की प्रमुख विधाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 15

अथवा

रेखाचित्र और संस्मरण के अंतर को स्पष्ट करते हुए रेखाचित्र विधा की विशेषताएँ लिखिए।

3. 'आवारा मसीहा' जीवनी के आधार पर शरतचन्द्र की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'दद्दा' संस्मरण के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की साहित्यिक विशेषताओं को लिखिए।

P.T.O.

4. निराला के पत्र साहित्य की विषय-वस्तु और प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 15

अथवा

'डायरी' विधा के आधार पर रमेशचंद्र शाह की रचना 'अकेला मेला' की समीक्षा कीजिए।

5. निम्न गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×8=16

(क) राजसिक गर्व-भरी मुद्रा से माइक को मेज़ पर ठेल कर नीचे गिराते और सबको सकते में डालते हुए उन्होंने बोलना आरंभ किया तो उनके पहले ही शब्दों से सारी सभा में एक सनसनी-सी दौड़ गई। एक सन्नाटा और उसके बाद डेढ़ लाख जनता तक प्रयासरहित सहजता से पहुँचने वाले पहले ही शब्द - 'मेरी आवाज़' - 'मेरी आवाज़' भारत की लाख-लाख जनता तक किसी यंत्र के सहारे के बिना ही पहुँचेगी। माइक को उठा फेंकने की सफाई अंग्रेजी में देकर उन्होंने सभा को एक बार फिर अचरज में डालते हुए हिन्दुस्तानी में बोलना आरंभ किया।

अथवा

माखनलाल जी की कविता से पहला परिचय कारावास में हुआ। और भी अनेक पाठकों का पहला परिचय उसी कविता से हुआ होगा जिससे मेरा, पर उस परिस्थिति में नहीं। दिल्ली षड्यंत्र केस के एक अभियुक्त के रूप में दिल्ली जेल में लंबे दिन काटते हुए मैंने एक कापी में हिंदी की कविताएँ उतार कर रखना आरंभ किया था : कविता पढ़ने में रुचि थी और किताबें एक साथ दो-तीन से अधिक रख नहीं सकता था इसलिए पसंद की कविताएँ कापी में नकल करके पुस्तकें लौटा कर नई पुस्तकें मंगाता रहता था...तभी एक दिन चमत्कृत-सा होकर एक भारतीय आत्मा की छोटी-सी कविता पढ़ी।

(ख) मंदिर का विशाल प्रांगण खचाखच भरा था। उस विशाल जल-समुद्र में उठती हिलोरों ने मुझे छा लिया : पाँवों का जंगल था वह-पाँवों का समुद्र-कोमल फूल सरीखे पाँव...जर्जर

बिवाइयों से भरे पाँव, नंगे काले खुरदरे पाँव, गोरे, गहनों से अलंकृत पाँव....। कमजोर और लड़खड़ाते पाँव, फुरतीले थिरकते पाँव.....। पाँवों का मेला था वह, मुझ पर से गुजरता हुआ। और मैं ? मैं कहाँ था ? उस जंगल, उस समुद्र में ?.....।

अथवा

इस नाच की उत्पत्ति दरभंगा जिले में हुई, ऐसा अनुमान किया जाता है। पता नहीं, अपनी जन्मभूमि में इसकी क्या अवस्था है, किंतु उत्तरी बिहार के कुछ जिलों तथा भागलपुर, पूर्णिया आदि के गांवों में आज भी इसकी 'कद्र' है। यह निम्न स्तर के लोगों की ही चीज रह गई है। तथाकथित भद्र समाज के लोग इस नाच को देखने में अपनी हेठी समझते हैं, लेकिन मुसहर, धांगड़, दुसाध के यहाँ – विवाह, मुंडन तथा अन्य अवसरों पर इसकी धूम मची रहती है। जब से मैं अपने को भद्र और शिक्षित समझने लगा, तब से इस नाच से दूर रहने की चेष्टा करने लगा, किंतु थोड़े दिनों के बाद ही मुझे अपनी गलती मालूम हुई और मैं इसके पीछे 'फिदा' रहने लगा।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 2×7=14

(1) जीवनी विधा : उद्भव और विकास

(2) पत्र–साहित्य की विशेषताएँ

(3) 'अकेला मेला' डायरी की **दो** प्रमुख घटनाएँ

(4) 'अज्ञेय' की दृष्टि में 'उपन्यास सम्राट'।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 7360 **J**

Unique Paper Code : 2052203601

Name of the Paper : साहित्य चिंतन

Name of the Course : **B.A. Prog.**

Semester : VI – DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. छंदमुक्त कविता का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताओं का सोदाहरण वर्णन कीजिए ।

अथवा

प्रगीतात्मक कविता से आप क्या समझते हैं, सोदाहरण लिखिए । (15)

2. उपन्यास के तत्त्वों पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

रेखाचित्र और संस्मरण में अंतर स्पष्ट करते हुए रेखाचित्र की विशेषताएँ लिखिए। (15)

3. लोकमंगल की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'अनुभूति की प्रामाणिकता' की अवधारणा को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (15)

4. बिम्ब क्या है, कविता में बिम्ब का क्या महत्व है सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

विसंगति से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित लिखिए। (15)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10+10+10)

(क) आख्यानपरक कविता

(ख) निबंध के प्रकार

(ग) पुनर्जागरण

(घ) प्रतीक

(ङ) डायरी

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 7396 **J**

Unique Paper Code : 2052203601

Name of the Paper : साहित्य चिंतन

Name of the Course : **B.A. Prog.**

Semester : VI – DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. प्रगीतात्मक कविता का परिचय देते हुए इसकी विशेषताएं लिखिए।

अथवा

साहित्य में नवीगीत की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। (15)

2. नाटक विधा के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

अथवा

P.T.O.

आत्मकथा और जीवनी में अंतर बताते हुए जीवनी विधा की विशेषताएँ लिखिए। (15)

3. आधुनिकता और आधुनिकता बोध से आप क्या समझते हैं, स्पष्ट कीजिए।

अथवा

पुनर्जागरण ने साहित्य की दशा और दिशा बदल दी– इस कथन पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। (15)

4. बिम्ब का अर्थ बताते हुए साहित्य में इसके महत्व को रेखांकित कीजिए।

अथवा

विसंगति और विडंबना के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। (15)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10+10+10)

(क) आख्यानपरक कविता

(ख) संस्मरण

(ग) लोकमंगल की अवधारणा

(घ) मिथक

(ङ) मुक्त छंद

(2000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4973 **J**

Unique Paper Code : 2054000029

Name of the Paper : साहित्यालोचन

Name of the Course : **GE : Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. प्रबंध-काव्य की अवधारणा स्पष्ट करते हुए इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

कथा साहित्य की एक प्रमुख विधा के रूप में कहानी के तत्वों का विवेचन कीजिए।

2. शब्दशक्ति किसे कहते हैं? व्यंजना शब्दशक्ति और उसके भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (15)

P.T.O.

अथवा

काव्य गुण की संकल्पना स्पष्ट करते हुए प्रमुख काव्य गुणों पर सोदाहरण विचार कीजिए।

3. रस के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए रस के भेदों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

अलंकार की परिभाषा देते हुए उपमा और रूपक अलंकार में उदाहरणसहित अंतर स्पष्ट कीजिए।

4. यथार्थवाद की विशेषताएं लिखिए। (15)

अथवा

मिथक से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर यह स्पष्ट कीजिए कि 'मिथक किसी मानव समाज की सामूहिक अनुभूतियों की उपज होते हैं और उसे एक इकाई में बांध कर रखते हैं'।

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10×3)

(क) फैंटसी

(ख) बिंब

(ग) काव्य–दोष

(घ) प्रगीत

(ङ) रस के अंग/अवयव

[This question paper contains 3 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **6267** **I**

Unique Paper Code : 2053100014

Name of the Paper : Shodh Pravidhi

Type of the Course : **DSE**

Semester : VI

Programme : Hindi

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. शोध की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

शोध के विभिन्न क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।

P.T.O.

2. तुलनात्मक शोध पद्धति अथवा समाजशास्त्रीय शोध पद्धति का विश्लेषण कीजिए। 15

3. शोध – प्रक्रिया के विविध चरणों में विषय – चयन एवं तथ्य – विश्लेषण का महत्व प्रतिपादित कीजिए। 15

अथवा

'शोध प्रबंध लेखन शोध – प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण चरण है' – तर्क सहित उत्तर दीजिए।

4. शोध करते हुए एक शोधार्थी को किन – किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है ? स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

एक अच्छे शोधार्थी में कौन – कौन से गुण अपेक्षित हैं ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 10×3=30

(i) शोध प्रक्रिया

(ii) पाठालोचन

(iii) सामग्री संकलन

(iv) रूपरेखा निर्माण

(v) संदर्भ सूची निर्माण

***

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिये : (8+7)

(क) "उतनी दूर मत ब्याहना बाबा" कविता की संवेदना

(ख) पितृसत्ता की अवधारणा

(ग) आदिवासी साहित्य की अवधारणा

(घ) महादेवी कृत निबंध 'घर और बाहर' के मूल बिंदु

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 7468 **J**

Unique Paper Code : 2052203602

Name of the Paper : Vimarsh Ki Samjajiki Aur Hindi Sahitya

Name of the Course : **B.A. Prog.**

Semester : VI – DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (10+10+10)

(क) मैं उसकी बीवी को त्रस्त करने गयी थी, पर खुद ही त्रस्त और पस्त होकर लौटी। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि यह औरत है या मांस का लोंदा? इसका आदमी तीन साल से एक दूसरी लड़की के साथ मस्ती मार रहा है और उसे न कोई तकलीफ, न कष्ट, मैं इसकी जगह होऊँ तो शायद एक दिन भी इस तरह की अपमानजनक स्थिति को बर्दाश्त न करूँ। इसके शरीर पर चमड़ी लिपटी है, या गैंडे की खाल? यह तो मुझे बहुत बाद में अपने अनुभव ने सिखाया कि अधिकतर शादी शुदा औरतें ऐसी होती हैं, जिन्हें अपने घर की दीवारों से बेशुमार लगाव होता है। इतना ज्यादा कि धीरे धीरे उन दीवारों को ही अपने शरीर के चारों ओर लपेट लेती हैं। फिर मान अपमान के सारे हमले उनसें टकराकर बाहर ही ढेर हो जाते हैं और वे उनसे बे असर सती साध्वी सी भीतर सुरक्षित बैठी रहती हैं।

अथवा

हम सब हैरान रह गए जब सुरेश काका ने हमें बताया कि वे ब्लाक प्रमुख के पद के लिए चुनाव लड़ने जा रहे हैं। हमें नहीं पता कि उन्हें ऐसा करने की सलाह किसने दी। उनके पिता

2. साहित्य के अध्ययन और आस्वादन में सामाजिक विमर्शों के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। (15)

अथवा

स्त्री विमर्श की अवधारणा स्पष्ट करते हुये स्त्रीवादी दृष्टि और हिंदी साहित्य पर विचार व्यक्त कीजिये।

3. मन्नू भंडारी कृत 'स्त्री सुबोधिनी' में निहित व्यंग्य की स्त्रीवादी व्याख्या कीजिये। (15)

अथवा

दलित विमर्श की दृष्टि से मोहनदास नैमिशराय की कहानी 'अपना गांव' की सम्वेदना पर प्रकाश डालिये।

4. 'जंगल से आगे' के आधार पर आदिवासी स्त्री–नेतना पर विचार कीजिये। (15)

अथवा

'हीरा डोम' कविता में व्यक्त दलित–चेतना की व्याख्या कीजिये।

इस बात ने मुझे भविष्य की चिंता से भर दिया और मेरी निराशा गहरे अवसाद में बदल गई, जिससे दोपहर के खाने तक मैं व्याकुल बनी रही। खाने की कठिनांई और शर्मिंदगी के बावजूद, रोज का नियमित भोजन एक अचूक इलाज था। एक दिन में तीन बार भोजन, गांव के हिसाब से यह विलासिता थी। सिर्फ दोपहर का भोजन ही पूरे दिन के ओजन से अधिक होता था। यहां का भोजन एक दावत की तरह थी। जंगल में, भोजन का अर्थ भूख से बचने के लिए पेट भरने के अलावा कुछ भी नहीं होता है। वहां खाने के साथ शुद्धता-परिष्कार जैसी कोई बात नहीं जुड़ी होती और खाने को आकर्षक बनाने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता है। भोजन जल्दी से खाया जाता है और पेट भरने के काम में हर कोई इतना मगन रहता है कि खाने के दौरान कोई भी बोलता नहीं है। हम इरुला लोगों के लिए बुरा वक्त वो होता है, जब हमें एक प्रकार के जंगली कंदमूल पर कुछ हफ्ते बिताने पड़ते हैं। मैंने बचपन में पहली बार उसे खाया था और अब उसकी आदी हो गई हूं। यहां भोजन स्वाद में तो अच्छा था ही देखने में भी आकर्षक है। और जब मैं घातु के उपकरणों (छुरी, कांटे, चम्मच) का उपयोग करने की आदी हो गयी तो मुझे उससे खाने में बहुत मजा आने लगा था।

ने उन्हें समझाने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने एक न सुनी। मेरे आजा और बाबा ने उन्हें समझाया कि राजनीति में मत कूदो, लेकिन सुरेश काका ने किसी की एक न सुनी। बाबा ने सुरेश काका से सख्ती से कहा, 'जिन चीजों के खिलाफ हमने लड़ाई लड़ी है ठेकेदारी प्रथा, राशन डिपो पर कालाबाजारी, बड़े व्यापारियों द्वारा ग्राहकों और हाट में छोटे व्यापारियों को ठगना, सरकारी दफ्तरों में अष्टाचार, सुरेश, राजनीति में आने के बांद ये सब तुम्हें सामान्य लगने लगेंगे। तुम अष्टाचार को जीवन का एक तरीका मान लोगे। धीरे धीरे तुम भी इस भ्रष्टाचार में फंस जाओगे। अगर तुम्हें लगता है कि राजनीति में आकर तुम शष्टाचार से लड़ सकते हो, तो तुम नहीं लड़ोगे। यह चुनाव मत लड़ो, सुरेश।' सुरेश कांका ने बाबा की बात नहीं मानी। वे कुछ और ही सोच रहे थे। वे सोच रहे थे कि प्रमुख बनकर वे चीजों को अपने हिसाब से चला पाएंगे, सरकारी व्यवस्था को नियमों के हिसाब से चला पाएंगे। सरकारी काम में दखलंदाजी करने पर उसे जेल नहीं भेजा जाएगा। सबकी अपनी अपनी राय थी। सुरेश काका की अपनी राय थी। वे अपनी राय पर आगे बढ़े।

(ख) हमनी के राति दिन दुखवा भोगत बानी
हमनी के साहेब से मिनती सुनाइबि।
हमनी के दुख भगवानओं न देखताजे,
हमनी के कबले कलेसवा उठाइबि।
पदरी सहेब के कचहरी में जाइबि जां,
बेधरम होके रंगरेज बानि जाइबिजां,
हाय रामधसरम न छोड़त बनत बा जे !
बेधरम होके कैसे मुंहवा दिखइबि ।।-

अथवा

ऐसे में जब बाजार से गुजरते
एक गिलास पानी मिलना कठिन हो गया है
और पेप्सी आसान
नहीं चाहकर हम आसान रास्ते अपना लेते हैं दोस्त! और
वे लोग जो हमारे भीतर जल जंगल जमीन बचाने का जज़्बा देखते हैं

झारखण्डी अस्मिता और देशज संस्कृति तलाशते हैं
उन्हीं की संगति ने हमारी भाषा बिगाड़ दी
और प्यास बुझाने के लिए
पेप्सी और स्प्राइट का चस्का लगा दिया।

(ग) बस, इस अन्तिम कड़ी को पकड़कर कह सकती हूँ कि मेरी उस कहानी की किताब का छपना कान्ति जी के लिए प्रतिशोध लेने का एक कारण बन गया। उन्हें चन्द्रकिरण सौनरेक्सा को बदनाम करने का बहाना मिल गया। गुस्से में विष्णु जी के यहाँ जाकर जो कुछ दो घंटे लगातार कान्ति जी ने जवान मिट्टी के लिए प्रभात वालों से मिलाने का दंड उन्हें दिया, वह यथेष्ट है यह सिद्ध करने के लिए कि उन जैसे शालीन, गम्भीर व्यक्ति पर कोई इतना छुद्र आरोप अपने होश-हवास में नहीं लगा सकता। उनका बेटा-बहू-बच्चे सब अपने 'चाचा जी' का मुँह देख रहे थे। लखनऊ में अपने जानने वालों में यही कहा कि अपने पुराने सम्बन्धों के कारण विष्णु जी ने मेरी पत्नी की पुस्तक छपवाई।

अथवा